सांध्य दैनिक
# 4PM
जिद...सच की
www.4pm.co.in www.facebook.com/4pmnewsnetwork @Editor_SanjayS YouTube @4pm NEWS NETWORK
● वर्ष: 12 ● अंक 271 पृष्ठ: 8 ● लखनऊ, बुधवार 11 नवम्बर, 2026
मूल्य ₹ 3/-



विश्वास वो शक्ति है जिससे उजड़ी हुई दुनिया में भी प्रकाश किया जा सकता है।
-हेलेन केलर



भारत यूएई को हराकर सेमीफाइनल... 7 | पंजाब में विधानसभा चुनाव में... 3 | पूरे उप्र में खुलेआम मिल रहा... 2

## हाय नीतीश! ये तूने क्या किया...

# जेडीयू की उल्टी गिनती शुरू? बिहार में महाभारत!



## जेडीयू मंत्री श्रवण कुमार ने मानी भाजपा-जेडीयू में खटास

» पीके का दावा—आधे नेता भाजपा में, आधे जन सुराज में जाएंगे!

» नीतीश के बाद किसकी होगी जेडीयू? अस्तित्व पर मंडराया संकट!

□□□ 4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

पटना। जिस पार्टी को नीतीश कुमार ने अपने खून पसीने से सींचा, जिस जेडीयू के दम पर उन्होंने बिहार की राजनीति में अपनी अलग पहचान बनाई, जिसने कभी दिल्ली की सत्ता के समीकरणों को प्रभावित किया और जिसके इशारे के बिना बिहार में सरकार बनाने की कल्पना तक मुश्किल थी, आज उसी जनता दल यूनाइटेड के सामने अपने अस्तित्व को बचाने का सवाल खड़ा होता दिखाई दे रहा है। कभी बिहार की राजनीति में किंगमेकर और किंग दोनों की भूमिका निभाने वाली जेडीयू अब खुद अपनी राजनीतिक जमीन तलाशती नजर आ रही है।

सवाल सिर्फ भाजपा से रिश्तों में आई खटास का नहीं है। सवाल यह है कि नीतीश कुमार के मुख्यमंत्री पद से हटने के बाद क्या जेडीयू का राजनीतिक आधार भी खिसकने लगा है? क्या पार्टी की ताकत उसके संगठन में कम और नीतीश कुमार के चेहरे में ज्यादा सिमटी हुई थी? बिहार की राजनीति में इन दिनों जो कुछ घट रहा है, उसने इस सवाल को और गंभीर बना दिया है। विधान परिषद चुनाव में जेडीयू को चार में से तीन सीटों पर हार मिली। पार्टी के उम्मीदवारों ने गठबंधन के भीतर ही साथ न मिलने और भीतरघात के आरोप लगाए। दो निर्दलीय उम्मीदवारों ने जेडीयू प्रत्याशियों को हराया और बाद में भाजपा के करीब पहुंच गए। जेडीयू के वरिष्ठ मंत्री श्रवण कुमार ने भी स्वीकार किया कि चुनाव के बाद भाजपा और जेडीयू के रिश्तों में खटास आई है। भाजपा भले ही सबकुछ ठीक होने का दावा कर रही हो, लेकिन गठबंधन के भीतर उठे सवालों ने सियासी हलचल बढ़ा दी है। इसी बीच जन सुराज के संस्थापक प्रशांत किशोर ने जेडीयू के भविष्य को लेकर ऐसा दावा कर दिया है जिसने पार्टी की मुश्किलों पर नई बहस छेड़ दी है। नीतीश कुमार के सक्रिय राजनीति से हटने के बाद जेडीयू कई धड़ों में बंट सकती है। उनके मुताबिक पार्टी के कुछ नेता भाजपा में चले जाएंगे, कुछ जन सुराज का रास्ता पकड़ेंगे और बाकी दूसरे दलों की तरफ जा सकते हैं।

### श्रवण कुमार ने कह दी दिल की बात!

जेडीयू के वरिष्ठ नेता और नीतीश कुमार के करीबी माने जाने वाले मंत्री श्रवण कुमार ने इस नाराजगी को सार्वजनिक रूप से स्वीकार किया। उन्होंने कहा कि विधान परिषद चुनाव के बाद भाजपा और जेडीयू के रिश्तों में कुछ खटास आई है। उन्होंने यह भी बताया कि चुनाव में कहां चूक हुई, किसने किसका साथ छोड़ा, कहां गड़बड़ी हुई और भरोसा कहां टूटा। अब सवाल है कि गठबंधन में भरोसा टूटने की नौबत आखिर आई क्यों? क्या भाजपा और जेडीयू के बीच सीटों और राजनीतिक हिस्सेदारी को लेकर कोई नया तनाव है? क्या मुख्यमंत्री की कुर्सी भाजपा के पास जाने के बाद जेडीयू के नेताओं को अपनी भूमिका पहले जैसी नहीं लग रही? या फिर विधान परिषद चुनाव ने उस असंतोष को बाहर निकाल दिया जो लंबे समय से भीतर ही भीतर पनप रहा था?

### एमएलसी चुनाव ने खोल दी गठबंधन की गांठ!

बिहार विधान परिषद के हालिया चुनाव ने भाजपा और जेडीयू के रिश्तों की असहजता को सार्वजनिक कर दिया। जेडीयू ने चार सीटों पर अपने उम्मीदवार उतारे थे, लेकिन उसे केवल एक सीट पर जीत मिली। तीन सीटों पर पार्टी को हार का सामना करना पड़ा। एनडीए के लिए भी ये नतीजे झटका साबित हुए। आठ सीटों के चुनाव में गठबंधन को पांच सीटों पर हार मिली। लेकिन जेडीयू के लिए हार से ज्यादा तकलीफ उस राजनीतिक घटनाक्रम से हुई जो चुनाव के बाद सामने आया। तिरहुत स्नातक सीट पर बंशीधर ब्रजवासी और सारण शिक्षक सीट पर राहुल राज ने जेडीयू उम्मीदवारों को हराया। दोनों निर्दलीय उम्मीदवारों के भाजपा के करीब पहुंचने की खबरों ने जेडीयू के भीतर नाराजगी बढ़ा दी। जेडीयू के उम्मीदवारों और नेताओं ने गठबंधन के भीतर ही साथ न मिलने के आरोप लगाए। कुछ ने तो सीधे-सीधे भीतरघात की बात कही। आरोप था कि जिन सीटों पर गठबंधन के उम्मीदवारों को समर्थन मिलना चाहिए था, वहां उन्हें अपेक्षित सहयोग नहीं मिला। चुनाव में किसने किसका साथ दिया और किसने किसकी राह में बाधा खड़ी की, यह सवाल जेडीयू के भीतर चर्चा का विषय बन गया। यहीं से भाजपा और जेडीयू के रिश्तों में खटास की खबरें तेज हुईं।

### क्या जेडीयू का राजनीतिक अध्याय खत्म होने की ओर है?

किसी राजनीतिक दल का भविष्य केवल एक चुनाव एक हार या गठबंधन के भीतर हुई खटास से तय नहीं होता। जेडीयू के पास बिहार में संगठन है जनाधार है विधायक और नेता हैं। पार्टी का राजनीतिक इतिहास भी उसकी ताकत है। इसलिए अभी यह कहना कि जेडीयू खत्म हो जाएगी जल्दबाजी होगी। लेकिन यह भी सच है कि क्षेत्रीय दलों के सामने नेतृत्व परिवर्तन का संकट कई बार गंभीर रूप लेता है। जब पार्टी की पूरी राजनीति एक बड़े नेता के इर्द-गिर्द घूमती है तो उसके बाद संगठन को नए सिरे से अपनी पहचान बनानी पड़ती है। जेडीयू के सामने भी यही चुनौती है। बिहार में भाजपा का बढ़ता राजनीतिक प्रभाव, जेडीयू के भीतर नेतृत्व का सवाल, विधान परिषद चुनाव के बाद पैदा हुआ अविश्वास और प्रशांत किशोर की ओर से लगाए गए टूट के दावे इन सबने मिलकर पार्टी के भविष्य को लेकर बहस तेज कर दी है। नीतीश कुमार ने जिस पार्टी को बिहार की सत्ता के केंद्र में पहुंचाया वह आज अपने अगले राजनीतिक अध्याय की तलाश में है। भाजपा के साथ रिश्ते संभालना अपने नेताओं को एकजुट रखना और नए नेतृत्व को स्थापित करना तीनों मोर्चों पर जेडीयू की परीक्षा होनी है।

### जेडीयू के भीतर मौजूद बेचैनी को पढ़ने की कोशिश



अब इसे प्रशांत किशोर की राजनीतिक भविष्यवाणी कहिए या जेडीयू के भीतर मौजूद बेचैनी को पढ़ने की कोशिश, लेकिन सवाल अपनी जगह कायम है। क्या जेडीयू के पास नीतीश कुमार के बाद कोई ऐसा चेहरा, कोई ऐसा नेतृत्व और कोई ऐसी राजनीतिक ताकत है जो पार्टी को एकजुट रख सके? क्या भाजपा के साथ गठबंधन में जेडीयू अपनी स्वतंत्र पहचान बचा पाएगी? और क्या नीतीश के सियासी उत्तराधिकार की लड़ाई पार्टी के भीतर नए समीकरण पैदा कर रही है? बिहार की राजनीति में कभी नीतीश कुमार के एक फैसले से सरकारें बनती-बिगड़ती थीं। आज उसी जेडीयू के भविष्य पर सवाल उठ रहे हैं। सत्ता की गाड़ी में साथ बैठे दोनों पुराने साझेदारों के बीच भरोसे की दरार दिखने लगी है। ऐसे में सवाल उठना लाजिमी है—हाय नीतीश! ये तूने क्या किया? जिस पार्टी को आपने यहां तक पहुंचाया, क्या वह आपके बाद अपना रास्ता भी तय कर पाएगी या फिर बिहार की राजनीति में जेडीयू का एक लंबा अध्याय धीरे-धीरे बंद होने की ओर बढ़ रहा है?

# पूरे उप्र में खुलेआम मिल रहा है गांजा : अखिलेश

» सपा प्रमुख ने मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ को घेरा

» अयोध्या को बदनाम करने के लिए ही वहां गांजा बरामद करवाया जा रहा

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। सपा प्रमुख का भाजपा व सीएम योगी पर प्रहार जारी है। सपा प्रमुख ने सोशल मीडिया मंच एक्स पर एक पोस्ट में कहा, अयोध्या को बदनाम करने के लिए ही क्या गांजा केवल वहां से बरामद दिखाया जा रहा है, जबकि सच यह है कि पूरे उप्र में गांजा खुलेआम मिल रहा है।

उन्होंने मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व वाली भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) सरकार पर परोक्ष रूप से निशाना साधते हुए कहा, अभी दो दिन पहले ही तो मुख्य उपभोक्ता वहीं थे। उत्तर प्रदेश की राजनीति में बयानों के तीर और प्रशासनिक कार्रवाइयों पर सियासी घमासान कोई नई बात नहीं है, लेकिन हाल ही में अयोध्या जिले में हुई एक बड़ी मादक पदार्थ (गांजा) बरामदगी ने एक नया राजनीतिक मोड़ ले लिया है। समाजवादी पार्टी (सपा) के राष्ट्रीय अध्यक्ष और पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव ने इस पूरी कार्रवाई को लेकर राज्य की भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) सरकार और मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ पर जोरदार हमला बोला है। सोशल मीडिया मंच एक्स (पूर्व में ट्विटर) पर एक के बाद एक तीखे सवाल दागते हुए अखिलेश यादव ने आरोप लगाया कि यह कार्रवाई अयोध्या जैसी पवित्र नगरी को बदनाम करने की एक सोची-समझी साजिश का हिस्सा भी हो सकती है। जरूर कोई विशेष कृपा प्राप्त होगा। पूर्व मुख्यमंत्री यादव ने कहा, वैसे यह भी इत्तेफाक है कि इधर उन्होंने लगभग 1.27 करोड़ वोट कटने की बात कही और उधर लगभग 1.27 करोड़ का गांजा पकड़ा गया। कुछ तो गड़बड़ है! सपा प्रमुख ने अपनी इस पोस्ट के साथ अयोध्या जिले के पूराकलंदर थाने की एक तस्वीर भी साझा की।



## थाना पूराकलंदर की तस्वीर साझा की

अपनी बात को वजन देने और प्रशासनिक तंत्र को कठघरे में खड़ा करने के लिए अखिलेश यादव ने इस पोस्ट के साथ अयोध्या जिले के पूराकलंदर थाना की एक तस्वीर भी साझा की। इस तस्वीर के जरिए उन्होंने यह दर्शाने की कोशिश की कि स्थानीय पुलिस और प्रशासन की नाक के नीचे किस तरह अवैध गतिविधियों का जाल बिछा हुआ था।

## लिंक एक्सप्रेसवे के टेंडरों में भ्रष्टाचार

सपा अध्यक्ष और पूर्व सीएम अखिलेश यादव ने यूपीडा के लिंक एक्सप्रेसवे के सात टेंडरों को लेकर भ्रष्टाचार के गंभीर आरोप लगाए है। उन्होंने अपने सोशल मीडिया अकाउंट एक्स के माध्यम से कहा कि यूपीडा लिंक एक्सप्रेसवे के टेंडरों में कुछ गिनी-चुनी कंपनियों व भाजपा सरकार की मिलीभगत से टेंडर आपस में बांट लिए जा रहे हैं। ये दुनिया को दिखाने भर का टेंडर है, दरअसल सारा खेल मेज के अंडर है। उन्होंने कहा कि ये आपस में मिल बांटकर खाने की नूराकुश्ती है, जिसमें भाजपा सरकार पैसा खाकर चुपचाप बैठे अंपायर की तरह आंख-मुंह पर ताला लगाए बैठी है। सपा अध्यक्ष ने जिस रेट पर टेंडर दिए गए हैं, उसकी सूची भी सार्वजनिक की है।एक अन्य पोस्ट में लिखा कि मुख्यमंत्री का 80-20 से मतलब यह है कि उनका भाजपा गठबंधन अधिकतम 80 सीट पर ही लड़ने लायक होगा और पीडीए गठबंधन, एनडीए के मुकाबले 20 (बीस) साबित होगा। एक अन्य जारी किए गए बयान में अखिलेश यादव ने कहा कि यूपी में सपा की सरकार बनने पर अयोध्या के जमीन घोटाले की जांच कराई जाएगी। अयोध्या को बाहरी ठेकेदारों से मुक्त कराया जाएगा। सर्किल रेट घोटाले में शामिल भाजपा नेताओं और भ्रष्ट अधिकारियों को बख्शा नहीं जाएगा। अयोध्या की जमीन से जुड़े मामलों की जांच कर दोषियों की संपत्ति भी खंगाली जाएगी। अखिलेश 12 दिसंबर को परिवार के साथ रामलला के दर्शन करेंगे।

# 2027 में ओवैसी और चंद्रशेखर आजाद मिलकर लड़ेंगे विस चुनाव

» यूपी चुनाव के लिए सामने आया नया गठबंधन

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। यूपी विधानसभा चुनाव 2027 के लिए तीसरे मोर्चे की एंट्री हो गई। चंद्रशेखर आजाद और असदुद्दीन ओवैसी ने यूपी चुनाव के लिए गठबंधन किया है। बताया जा रहा है कि इसकी घोषणा कल लखनऊ में की जाएगी। गठबंधन की योजना प्रदेश की 150 विधानसभा सीटों पर चुनाव लड़ने की है।





यूपी का चुनाव अभी तक भाजपा के नेतृत्व वाले एनडीए और सपा के नेतृत्व वाले इंडिया गठबंधन के बीच माना जा रहा है पर औवैसी-चंद्रशेखर के दलों के गठबंधन के एलान के बाद राज्य में नये राजनीतिक समीकरण पैदा हो सकते हैं। इस नए मोर्चे में कुछ अन्य छोटे दल भी शामिल हो सकते हैं। इसके पहले, ओवैसी ने यूपी में इंडिया गठबंधन में शामिल होने की इच्छा जताई थी जिस पर अखिलेश यादव ने इन्कार कर दिया था। इस गठबंधन के जरिये प्रदेश के दलितों और मुस्लिमों के 40 फीसदी वोटबैंक को एकजुट करने का प्रयास किया जा सकता है जिससे इंडिया गठबंधन के सामने चुनौतियां खड़ी हो सकती हैं। ओवैसी ने चुनाव को लेकर प्रचार भी शुरू कर दिया है। हालांकि, अभी गठबंधन की आधिकारिक घोषणा नहीं हुई है। इसका एलान बुधवार को लखनऊ में होगा। आजाद समाज पार्टी के अध्यक्ष चंद्रशेखर आजाद नगीना से सांसद हैं। वह प्रदेश में दलितों के बीच लगातार अपनी पैठ मजबूत करने के प्रयास कर रहे हैं। वहीं, प्रदेश में बहुजन समाज पार्टी के कमजोर होने का फायदा समाजवादी पार्टी भी उठाने का प्रयास कर रही है। ऐसे में ओवैसी, चंद्रशेखर आजाद और अन्य छोटे दलों का गठबंधन प्रदेश में नए समीकरण पैदा करने के साथ ही इंडिया गठबंधन के सामने चुनौती पेश कर सकता है।

# भाजपा सरकार एक्यूआई के आंकड़ों में कर रही हेराफेरी : अंकुश नारंग

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। राजधानी में लगातार बिगड़ती वायु गुणवत्ता को लेकर आम आदमी पार्टी ने भाजपा की दिल्ली सरकार पर हमला बोला है। एमसीडी में नेता प्रतिपक्ष अंकुश नारंग ने आरोप लगाया कि दिल्ली गैस चैंबर बन चुकी है, लेकिन सरकार प्रदूषण रोकने के ठोस उपाय करने के बजाय एक्यूआई के आंकड़ों में हेराफेरी कर रही है।

उन्होंने दावा किया कि दिवाली की रात पटेल नगर में एक्यूआई 1870 तक पहुंच गया था, जबकि अब भी कई इलाकों में इसका स्तर 500 के पार बना हुआ है। सिविक सेंटर स्थित एमसीडी मुख्यालय में प्रेस वार्ता के दौरान नारंग ने कहा कि प्रदूषित हवा के कारण लोगों को सांस लेने में परेशानी हो रही है। उन्होंने मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता और महापौर प्रवेश वाही से पूछा कि सड़कों पर पानी का छिड़काव और धूल नियंत्रण के लिए क्या कदम उठाए जा रहे हैं। नारंग ने मॉनिटरिंग स्टेशनों की कार्यप्रणाली पर भी सवाल उठाए। उन्होंने आरोप लगाया कि जहांगीरपुरी के मॉनिटरिंग स्टेशन पर पानी का छिड़काव किया जा रहा है, जिससे वास्तविक प्रदूषण स्तर प्रभावित हो सकता है।

# आरोप लगाने के बजाय दर्ज कराएं रिपोर्ट : गौतम

» आरोप-प्रत्यारोप के जरिये आपस में उलझी पार्टी

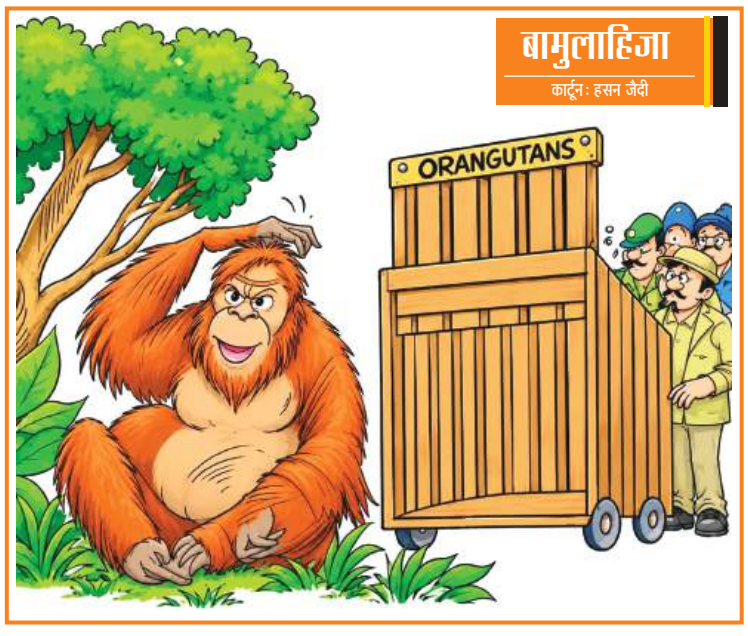
4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। यूपी विधानसभा चुनाव 2027 में सीट बंटवारे से पहले कांग्रेस की मुश्किलें बढ़ती नजर आ रही हैं। प्रदेश प्रभारी के करीबी लोगों पर टिकट के नाम पर रुपये मांगने के आरोप और आंतरिक गुटबाजी ने पार्टी की चुनौतियां बढ़ा दी हैं। प्रदेश प्रभारी ने आरोप लगाने वालों के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज कराने को कहा है, ताकि मामले की निष्पक्ष जांच हो सके।



दरअसल, कांग्रेस इस बार सपा से गठबंधन में अधिक सीटें हासिल करने की मुहिम में जुटी है। चर्चा है कि पार्टी ने करीब 200 सीटों की सूची सपा को सौंपी है। इसी बीच सोशल मीडिया पर वायरल एक पत्र में प्रदेश प्रभारी के दो करीबी लोगों पर टिकट के नाम पर रुपये लेने के आरोप लगाए गए हैं। इससे अधिक सीटें हासिल करने की कांग्रेस की कोशिशों को झटका लग सकता है। प्रदेश प्रभारी राजेंद्र पाल गौतम ने पत्र में लगाए गए आरोपों को खारिज किया है। उन्होंने कहा कि जिन लोगों पर आरोप लगाए गए हैं, उनके खिलाफ एफआईआर दर्ज कराई जाए, ताकि पुलिस जांच में सच्चाई सामने आ सके। जिस यूपीआई नंबर पर रुपये लेने का आरोप है, वह फर्जी है। उन्होंने कहा कि पार्टी शीर्ष नेतृत्व के एजेंडे के तहत प्रदेश में अभियान चला रही है, जो कुछ लोगों को पसंद नहीं आ रहा है। वह हर आरोप की जांच के लिए तैयार हैं। 2017 में सपा से गठबंधन के तहत कांग्रेस ने 114 सीटों पर चुनाव लड़ा और सात पर जीत दर्ज की थी।

2022 में पार्टी ने अकेले 399 सीटों पर प्रत्याशी उतारे, लेकिन रामपुर खास से आराधना मिश्रा मोना और फरेंदा से वीरेंद्र चौधरी ही जीत सके। खेरागढ़, मथुरा, किदवईनगर और जगदीशपुर में पार्टी दूसरे स्थान पर रही। वहीं, 2024 के लोकसभा चुनाव में सपा से गठबंधन के तहत मिली 17 सीटों में से कांग्रेस ने छह पर जीत दर्ज की। इनमें सीतापुर, अमेठी, रायबरेली, प्रयागराज, बाराबंकी और सहारनपुर शामिल हैं।




# छठ घाटों पर सुविधाएं दें रेखा सरकार : देवेंद्र यादव

## प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष ने भाजपा सरकार को निशाने पर लिया

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष देवेंद्र यादव ने छठ पूजा के दौरान विरोध प्रदर्शन नहीं करने की भाजपा की अपील पर सवाल उठाया है। उन्होंने कहा कि सरकार को विपक्षी दलों को नसीहत देने के बजाय छठ घाटों पर सुविधाएं उपलब्ध कराने पर ध्यान देना चाहिए। उन्होंने चेतावनी दी कि यदि घाटों पर स्वच्छ पानी, सफाई और सुरक्षा के पुख्ता इंतजाम नहीं हुए तो कांग्रेस सड़कों पर उतरेगी।



देवेंद्र यादव ने कहा कि दिल्ली भाजपा अध्यक्ष सह केंद्रीय राज्य मंत्री हर्ष मल्होत्रा ने राजनीतिक दलों से 14 से 16 नवंबर के दौरान विरोध प्रदर्शन रोकने की अपील की है। इसके बजाय भाजपा सरकार को सुरक्षित और स्वस्थ वातावरण सुनिश्चित करना चाहिए। उन्होंने आरोप लगाया कि दिवाली से ही लोग जहरीली हवा में सांस लेने को मजबूर हैं। उन्होंने यमुना के प्रदूषित पानी का मुद्दा उठाते हुए कहा कि करोड़ों खर्च होने के बावजूद छठ श्रद्धालुओं को स्वच्छ जल उपलब्ध नहीं कराया जा रहा है। आउटर रिंग रोड से इंद्रलोक तक मुनक नहर के किनारे प्रस्तावित 11 किलोमीटर लंबे छठ घाट पर भी उन्होंने सवाल उठाए। उनका कहना है कि घाट बनाने के साथ वहां साफ पानी, महिलाओं के लिए कपड़े बदलने के कमरे, मोबाइल शौचालय, सीसीटीवी कैमरे, अग्निशमन व्यवस्था और चौबीस घंटे सफाई दल की तैनाती जरूरी है।

# पंजाब में विधानसभा चुनाव में अभी देरी, पर बजने लगी रणभेरी

## सभी सियासी दलों ने बनानी शुरू की रणनीति

» आप में आंतरिक कलह और अंतर्विरोधों के कारण दरार

» कांग्रेस, भाजपा व शिअद ने भी कसी कमर

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क



चंडीगढ़। पंजाब विधानसभा चुनाव 2027 की तारीखें आने में अभी समय है पर राज्य की राजनीतिक बिसात पर शह और मात का खेल अपने चरम पर पहुंच चुका है। सभी पार्टियों ने कमर कस लिया है। सत्ता में बैठी आप ने अपनी तैयारी पहले शुरू कर दी हे। भाजपा, कांग्रेस व शिअद समेत सभी सियासी दलों ने अपनी रणनीति बनानी शुरू कर दी है। कांग्रेस व भाजपा ने पूरी ताकत झोक दी है। कांग्रेस को पूरी उम्मीद है कि वह 27 में अपनी सरकार बना लेगी। इसी क्रम में वह अपने यहां सारी गुटबाजी खतम कराने में जुटी और कामयाब हुई। वहीं नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी ने राज्य के दौरे शुरूकर दिये हैं। वहीं आम आदमी पार्टी द्वारा 31 अक्टूबर 2026 को अपने 40 उम्मीदवारों की पहली सूची जारी किए जाने के ठीक बाद, पार्टी के भीतर सुलग रही असंतोष की चिंगारी एक बड़े विस्फोट में बदल गई है।

अमृतसर नॉर्थ से विधायक और पूर्व आईपीएस अधिकारी कुंवर विजय प्रताप सिंह, समाना से विधायक व पूर्व स्वास्थ्य मंत्री चेतन सिंह जौड़ामाजरा, और सनौर से विधायक हरमीत सिंह पठानमाजरा का एक साथ पाला बदलकर भारतीय जनता पार्टी में शामिल होना केवल तीन विधायकों का इस्तीफा नहीं है, बल्कि यह भगवंत मान सरकार और आम आदमी पार्टी के शीर्ष नेतृत्व के लिए एक गहरा राजनीतिक और नैतिक झटका है। नई दिल्ली में भाजपा के केंद्रीय कार्यालय में 2 नवंबर 2026 को जिस तरह इन नेताओं को पार्टी की सदस्यता दिलाई गई, उसने इस चर्चा को फिर से हवा दे दी है कि क्या पंजाब में भी भाजपा का बहुचर्चित ऑपरेशन लोटस पूरी ताकत से सक्रिय हो चुका है। दरअसल पंजाब की राजनीति इस समय एक बेहद संवेदनशील और अनिश्चित मोड़ पर खड़ी है। आम आदमी पार्टी जिसे अपनी सबसे सुरक्षित राजनीतिक जागीर समझ रही थी, वहां आंतरिक कलह और अंतर्विरोधों के कारण दरारें साफ दिखने लगी हैं। पहली लिस्ट आते ही जो बगावत शुरू हुई है, उसने यह साबित कर दिया है कि सत्ता का अति-केंद्रीकरण और विधायकों की आवाज को दबाना किसी भी राजनीतिक दल के लिए आत्मघाती हो सकता है। यह घटनाक्रम केवल विधायकों के दलबदल का मामला नहीं है, बल्कि यह पंजाब की जनता के उस जनादेश की परीक्षा है जो उसने पारंपरिक पार्टियों को नकार कर एक इंकलाब के नाम पर दिया था। यदि भगवंत मान और अरविंद केजरीवाल समय रहते अपने विधायकों के असंतोष को दूर करने और शासन व्यवस्था में सुधार करने में विफल रहते हैं, तो पंजाब में कमल का खिलना केवल समय की बात रह जाएगी। आगामी महीनों में होने वाले दलबदल और गठबंधन के नए समीकरण ही यह तय करेंगे कि पंजाब की कमान किसके हाथ में होगी, लेकिन फिलहाल के लिए इतना जरूर कहा जा सकता है कि आम आदमी पार्टी का किला भीतर से दरक रहा है और इसकी गूंज दिल्ली से लेकर चंडीगढ़ तक साफ सुनी जा सकती है।

### भाजपा के लिए पंजाब कठिन राजनीतिक मैदान

भाजपा के लिए पंजाब हमेशा से एक कठिन राजनीतिक मैदान रहा है, विशेष रूप से तीन कृषि कानूनों के विरोध में हुए किसान आंदोलनों के बाद से ग्रामीण क्षेत्रों में पार्टी को भारी विरोध का सामना करना पड़ा था। लेकिन अब, शिरोमणि अकाली दल के कमजोर होने और आम आदमी पार्टी के भीतर मचे इस घमासान के बीच, भाजपा पंजाब में अपने दम पर एक मजबूत विकल्प के रूप में उभरने की कोशिश कर रही है। आम आदमी पार्टी के कद्दावर हिंदू और सिख चेहरों को अपने पाले में लाकर भाजपा यह संदेश देना चाहती है कि वह राज्य के सभी वर्गों को साथ लेकर चलने के लिए तैयार है। पूर्व आईपीएस अधिकारी और सिख चेहरे के रूप में कुंवर विजय प्रताप की साफ-सुथरी छवि का उपयोग भाजपा माझा और मालवा क्षेत्रों में अपनी पैठ बढ़ाने के लिए करेगी। वहीं जौड़ामाजरा और पठानमाजरा जैसे जमीनी नेताओं के आने से पटियाला और उसके आसपास के जिलों में भाजपा का सांगठनिक ढांचा मजबूत होगा। भाजपा का यह रणनीतिक कदम स्पष्ट करता है कि वह पंजाब में केवल एक छोटी हिस्सेदार बनकर नहीं रहना चाहती, बल्कि 2027 में डबल इंजन की सरकार बनाने के लक्ष्य के साथ आगे बढ़ रही है।

### एकजुटता से ही मिलेगी पूरे देश में जीत

संसदीय लोकतंत्र में जब भी किसी राज्य में सत्ताधारी दल के विधायक विपक्षी दल में शामिल होते हैं, तो सत्ता पक्ष द्वारा इसे ऑपरेशन लोटस की संज्ञा दी जाती है। आम आदमी पार्टी का आरोप है कि भाजपा धनबल, बाहुबल और केंद्रीय जांच एजेंसियों जैसे प्रवर्तन निदेशालय और सीबीआई के डर का इस्तेमाल कर लोकतांत्रिक तरीके से चुनी गई सरकारों को अस्थिर करने का प्रयास कर रही है। देश के राजनीतिक इतिहास में कर्नाटक, मध्य प्रदेश और गोवा जैसे राज्यों में सरकारों का गिरना या विधायकों का बड़े पैमाने पर दलबदल करना इस रणनीति का हिस्सा माना जाता रहा है। पंजाब के संदर्भ में भी, तीन विधायकों के भाजपा में जाने के बाद आम आदमी पार्टी के राष्ट्रीय संयोजक अरविंद केजरीवाल और मुख्यमंत्री भगवंत मान ने तीखी प्रतिक्रिया व्यक्त की है। उनका तर्क है कि पंजाब की जनता ने 2022 में आम आदमी पार्टी को 92 सीटों का प्रचंड बहुमत देकर बदलाव की जो जिम्मेदारी सौंपी थी, भाजपा उसे चोर दरवाजे से हथियाना चाहती है। हालांकि, इस सिक्के का दूसरा पहलू भी है, जिसे नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। पार्टी छोड़ने वाले विधायकों ने जो आरोप लगाए हैं, वे केवल राजनीतिक अवसरवाद की कहानी नहीं कहते, बल्कि वे शासन और प्रशासन की गंभीर विफलताओं की ओर इशारा करते हैं।

### कई दिग्गजो ने छोड़ा साथ

इस राजनीतिक उठापटक को समझने के लिए इसके कालक्रम और पृष्ठभूमि को देखना अनिवार्य है। विपक्षी खेमे और राजनीतिक विश्लेषकों के अनुसार, पंजाब में आम आदमी पार्टी को कमजोर करने या सत्ता परिवर्तन की इस पटकथा की शुरुआत हाल-फिलहाल में नहीं हुई, बल्कि इसकी जड़ें काफी गहरी हैं। मार्च 2024 और उसके बाद के महीनों में जब आम आदमी पार्टी के राज्यसभा सांसदों का एक बड़ा धड़ा, जिसमें राघव चड्ढा और डॉ. संदीप पाठक जैसे प्रमुख चेहरे शामिल थे, धीरे-धीरे पार्टी लाइनों से दूर हुआ और बाद में 7 राज्यसभा सांसदों के एक गुट ने तकनीकी रूप से भाजपा के साथ विलय का रास्ता चुना, तभी से पंजाब की सत्ताधारी पार्टी के भीतर दरारें साफ दिखाई देने लगी थीं। उस समय भी मुख्यमंत्री भगवंत मान ने इसे गद्दारी करार दिया था और केंद्रीय एजेंसियों के दबाव में किया गया दलबदल बताया था। इसके बाद जब भगवंत मान सरकार ने जालंधर में अपना शक्ति प्रदर्शन करने के लिए विधायकों की बैठक बुलाई, तो 94 विधायकों में से केवल 65 विधायक ही वहां पहुंचे। यह इस बात का स्पष्ट संकेत था कि पार्टी के लगभग 29 विधायक या तो नेतृत्व से नाराज थे या किसी अन्य राजनीतिक विकल्प की तलाश में थे। अब, नवंबर 2026 की शुरुआत में तीन सिटिंग विधायकों का इस्तीफा देना इसी सिलसिले की अगली और अधिक आक्रामक कड़ी है।

### अपनी ही सरकार को कटघरे में खड़ा किया

इस्तीफा देने वाले तीनों नेताओं—कुंवर विजय प्रताप, चेतन सिंह जौड़ामाजरा और हरमीत सिंह पठानमाजरा—ने मीडिया के सामने आकर अपनी ही सरकार को कटघरे में खड़ा किया है। कुंवर विजय प्रताप सिंह, जिन्होंने 2015 के कोटकपूरा और बहबल कलां गुरु ग्रंथ साहिब बेअदबी मामले की जांच करने वाली एसआईटी का नेतृत्व किया था, लंबे समय से आम आदमी पार्टी की कार्यप्रणाली से असंतुष्ट चल रहे थे। उनका आरोप है कि जिस बेअदबी मामले को सुलझाने और दोषियों को सजा दिलाने के वादे पर आम आदमी पार्टी सत्ता में आई थी, उस पर मान सरकार ने जानबूझकर ढीली पैरवी की और राजनीति की। इसके अतिरिक्त, उन्होंने पंजाब के स्कूल्स ऑफ एमिनेंस के दावों पर सवाल उठाए और राज्य में फैले माफिया राज की निंदा की। वहीं, पूर्व मंत्री चेतन सिंह जौड़ामाजरा और हरमीत सिंह पठानमाजरा ने सीधे तौर पर पंजाब में बढ़ते नशे (चिट्टा) के कारोबार, कानून-व्यवस्था के ध्वस्त होने, बेलगाम गैंगस्टर संस्कृति और राज्य पर बढ़ते ढाई लाख करोड़ रुपये के कर्ज को अपनी नाराजगी का कारण बताया। इन नेताओं का सबसे गंभीर आरोप यह है कि पंजाब की चुनी हुई सरकार को चंडीगढ़ से नहीं, बल्कि दिल्ली में बैठे कुछ खास लोगों और उनके सलाहकारों (जैसे विभव कुमार) द्वारा चलाया जा रहा है, जिससे स्थानीय विधायकों और मंत्रियों की गरिमा को ठेस पहुंची है।




## आम आदमी पार्टी के कम से कम 20 से 30 विधायक भाजपा और कांग्रेस के संपर्क में

आने वाले दिनों में आम आदमी पार्टी के कितने और विधायक या नेता भाजपा का दामन थाम सकते हैं? राजनीतिक गलियारों और खुफिया रिपोर्टों में यह चर्चा आम है कि आम आदमी पार्टी के कम से कम 20 से 30 विधायक भाजपा और कांग्रेस के संपर्क में हैं। विशेष रूप से वे विधायक, जिन्हें डर है कि 2027 के चुनावों में उनका टिकट काटा जा सकता है, या जो भगवंत मान की कार्यशैली से लंबे समय से असंतुष्ट हैं, वे बहुत जल्द बड़ा कदम उठा सकते हैं। भाजपा के पंजाब प्रभारी सतीश पूनिया और राज्य इकाई के अध्यक्ष के अनुसार, यह केवल शुरुआत है और आने वाले दिनों में आम आदमी पार्टी के कई और बड़े चेहरे भाजपा में शामिल होंगे क्योंकि झाड़ू का कुनबा पूरी तरह बिखर चुका है। पार्टी के भीतर असंतोष का मुख्य कारण टिकट वितरण की नीति और हाल ही में किए गए संगठनात्मक बदलाव हैं। उदाहरण के लिए, समाना निर्वाचन क्षेत्र में चेतन सिंह जौड़ामाजरा की अनदेखी कर शिरोमणि अकाली दल के पूर्व वरिष्ठ नेता सुरजीत सिंह रखड़ा को हलका इंचार्ज बना दिया गया, जिससे जौड़ामाजरा का टिकट कटना तय माना जा रहा था। इसी प्रकार, कई अन्य क्षेत्रों में भी पुराने वफादारों को दरकिनार कर पैराशूट नेताओं को तरजीह दी जा रही है, जो आने वाले समय में एक बड़ी भगदड़ का कारण बन सकता है।





Sanjay Sharma

editor.sanjaysharma
@Editor_SanjayS

## जिद... सच की

# चुनाव आयोग की ढुलमुल रवैया निंदनीय

*इतने महीने बीत गए कई आंदोलन हो गए पर मुख्य चुनाव आयुक्त ज्ञानेश कुमार अपनी हठ नहीं छोड़ रहे हैं। उन पर लगातार विपक्षी नेताओं द्वारा आरोप लगाए जा रहे हैं। उनके इस्तीफे को लेकर पूरा विपक्षी गठबंधन एकजुट है। हालांकि विपक्ष की मांग उचित है। उन पर लगे आरोपों को सीईसी को खुद आगे बढ़कर बताना चाहिए कि सत्य क्या है। उनके ढुलमुल रवैये से इस संवैधानिक संस्था की साख को बट्टा ही लग रहा है। आपको बता दें आंतरिक मतभेदों और विशेष गहन पुनरीक्षण से जुड़े फैसलों को लेकर गंभीर विवाद खड़ा हो गया है। चुनाव आयोग का कहना है कि उसके सदस्यों के बीच अलग राय और विचार होना बातचीत का एक सामान्य हिस्सा था और सभी अंतिम फैसले सर्वसम्मति से लिए गए। कामकाज के तरीकों को लेकर चुनाव आयोग हाल के बरसों में लगातार विवादों में रहा है। विपक्ष का उस पर अविश्वास इतना गहरा शायद कभी नहीं रहा, जहां उसके तमाम फैसलों पर संदेह जताया गया। ऐसे में आयोग के भीतर निर्णय लेने की प्रक्रिया से जुड़ा जो खुलासा हुआ है, वह गंभीर सवाल खड़े करता है।*

**“ विपक्ष का उस पर अविश्वास इतना गहरा शायद कभी नहीं रहा, जहां उसके तमाम फैसलों पर संदेह जताया गया। ऐसे में आयोग के भीतर निर्णय लेने की प्रक्रिया से जुड़ा जो खुलासा हुआ है, वह गंभीर सवाल खड़े करता है।**

*चुनाव आयोग का कहना है कि उसके सदस्यों के बीच अलग राय और विचार होना बातचीत का एक सामान्य हिस्सा था और सभी अंतिम फैसले सर्वसम्मति से लिए गए। आयोग का यह भी कहना है कि 10 महीने की कुछ आंतरिक टिप्पणियों को अलग करके देखने से पूरी तस्वीर सामने नहीं आती। चुनाव आयोग के स्ट्रक्चर को देखें तो उसके तर्क सही लगते हैं। यह कतई जरूरी नहीं है कि किसी मामले में तीनों आयुक्तों की राय एक जैसी हो। संस्थान के भीतर असहमति लोकतांत्रिक प्रक्रिया का सामान्य हिस्सा है। अलग-अलग विचार सामने आने पर ही बेहतर विकल्प का रास्ता खुलता है। हालांकि विभिन्न विचारों का फायदा तभी मिलता है, जब उन्हें सुना जाए। आयोग को स्पष्ट करना चाहिए कि किन असहमतियों पर विचार हुआ, किनको स्वीकार किया गया और किन पर एक राय बनाने की कोशिश हुई। यह सब इसलिए जरूरी है क्योंकि मामला SIR, मतदाताओं के नाम हटाने-जोड़ने और उस डिजिटल सिस्टम से जुड़ा है, जिस पर इलेक्टोरल रोल निर्भर है। एसआईआर बेहद ही संवेदनशील मसला है। बिहार में इसकी शुरुआत से लेकर दिल्ली तक, कई बार इसे लेकर असंतोष जताया जा चुका है। पश्चिम बंगाल में तो विवाद अभी तक शांत नहीं हुआ है। इस घटना से विपक्ष के आरोपों को बल मिलेगा और SIR को लेकर शंका बढ़ेगी, बल्कि पूर्व सीएम ममता बनर्जी ने बंगाल में दोबारा विधानसभा चुनाव कराने की मांग कर ही दी है। जब इतनी महत्वपूर्ण प्रक्रिया जारी हो, तब इतने किंतु-परंतु ठीक नहीं हैं।*

(इस लेख पर आप अपनी राय 9559286005 पर एसएमएस या info@4pm.co.in पर ई-मेल भी कर सकते हैं)

# आम आदमी की पहुंच में होना चाहिए इलाज

सुरेश सेठ

आजादी के बाद देश ने चिकित्सा के क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रगति की है। निजी क्षेत्र की कई पांच सितारा अस्पताल श्रृंखलाएं विश्व के सर्वोत्तम चिकित्सा मानकों का मुकाबला करने में सक्षम हैं। तभी विदेशों में समय पर और त्वरित चिकित्सा सुविधाएं उपलब्ध न होने के कारण विदेशी रोगी भी भारत में इलाज कराने के लिए आ रहे हैं। अब चिकित्सा पर्यटन के क्षेत्र में एक नया आयाम उभर रहा है। पिछले दिनों सुप्रीम कोर्ट ने चिकित्सा क्षेत्र में सेवा और दवा की ऊंची कीमतों पर सवाल उठाए। दरअसल, भारत का सार्वजनिक चिकित्सा क्षेत्र अपनी विशेषज्ञता या उचित दवाओं की अनुपलब्धता के कारण प्रगति की राह से फिसल गया। मरीज निजी क्षेत्र के अस्पतालों में जाने के लिए मजबूर हो गए। यहां उपचार बहुत महंगा तो है लेकिन उचित और प्रभावी था। गंभीर बीमारियों से ग्रस्त मरीजों की संख्या बढ़ने के साथ निजी अस्पतालों में भीड़ बढ़ने लगी।

सुप्रीम कोर्ट ने निजी अस्पतालों के कमरों के दैनिक किरायों पर आश्चर्यजनक वृद्धि पर चिंता जताई। साथ ही, न्यायपालिका ने उन मामलों को गंभीरता से लिया, जहां मरीज की मृत्यु के बाद भारी-भरकम बिल का भुगतान किए बिना अस्पताल द्वारा शव परिजनों को सौंपने में आनाकानी की जाती थी। न्यायालय ने ऐसी अमानवीय प्रथा पर रोक लगाने के निर्देश दिए हैं। वहीं, सर्वोच्च न्यायालय ने भारत के फार्मा उद्योग में दवाओं की ऊंची कीमतों को लेकर भी गंभीर चिंता व्यक्त की। उल्लेखनीय है कि सर्वोच्च न्यायालय ने देश में कैंसर के उपचार और कीमोथेरैपी में इस्तेमाल होने वाली दवाओं की ऊंची कीमतों पर कड़ी टिप्पणी की थी। न्यायालय का कहना था कि इतनी महंगी दवाएं गरीब मरीजों के साथ अन्याय के समान हैं। अब सर्वोच्च न्यायालय ने दवाओं के एमआरपी और उनकी वास्तविक खुदरा कीमतों में भारी अंतर पर कड़ी नाराजगी जताई है। न्यायमूर्ति विक्रम नाथ और न्यायमूर्ति संदीप मेहता की पीठ ने एक मामले में सवाल उठाया कि जिस दवा की कीमत खुदरा विक्रेता के लिए 15 रुपये है, वह मरीजों को 250 रुपये में क्यों बेची जा रही है।

फिलहाल, दवाओं की ऊंची कीमतों और डॉक्टरों द्वारा सस्ती जेनेरिक दवाओं के बजाय महंगी दवाएं लिखे जाने से संबंधित दो याचिकाओं पर सर्वोच्च न्यायालय का फैसला आना है। सरकार की ओर से अतिरिक्त सॉलिसिटर जनरल ऐश्वर्या भाटी ने दवाओं की कीमतों का बचाव करते हुए कहा है कि फार्मा बाजार प्रतिस्पर्धी



है। उद्योग के अस्तित्व तथा विकास को बनाए रखने के लिए कीमतों का एक निश्चित स्तर आवश्यक है। लेकिन न्यायपीठ इससे संतुष्ट नहीं हुई। जहां एक ओर सॉलिस्टिर जनरल कह रहे थे कि सरकार दवा तंत्र को नियंत्रित नहीं करना चाहती और निजी क्षेत्र में हर क्षेत्र को अपना व्यापार करने की आजादी है। उन्होंने तर्क भी दिया कि भारत में दवाओं की कीमतें दुनिया में सबसे कम हैं। लेकिन कोर्ट इससे संतुष्ट नहीं हुआ। उल्लेखनीय है कि यदि दुनिया के अन्य देशों में दवाएं महंगी हैं, तो वहां की प्रति व्यक्ति आय को भी ध्यान में रखना होगा। सर्वोच्च न्यायालय की यह टिप्पणी भी महत्वपूर्ण है कि यदि भारत में दवाओं की कीमतें दुनिया के मुकाबले कम हैं, तो क्या इसके आधार पर कंपनियों को मनमानी कीमतें तय करने की छूट दी जा सकती है? गरीब मरीजों के पास मोल-भाव की क्षमता नहीं होती। इसलिए हर दवा को जेनेरिक बनाने, आवश्यक दवाओं की कीमतों पर प्रभावी सीमा तय करने और मरीजों को सस्ती चिकित्सा उपलब्ध कराने पर विचार होना चाहिए। आम तौर पर विकसित देशों में चिकित्सा दायित्व सरकारी क्षेत्र में होता है। वहां नाममात्र दाम पर चिकित्सा उपलब्ध हो जाती है इसलिए ऑस्ट्रेलिया हो, कनाडा या अमेरिका, मरीजों को शिकायत रहती है कि उन्हें तत्काल उपचार नहीं मिलता। लेकिन अधिक आर्थिक क्षमता के कारण देश में न केवल निजी चिकित्सा क्षेत्र पनपा है बल्कि उत्तरोत्तर महंगा हो गया है। देश के आम आदमी की जेब की पहुंच से बाहर हो रहा है। समाधान के तौर पर सरकारी क्षेत्र को सुदृढ़ किया जाए। पंजाब में तो इस समय तक 1245 मोहल्ला क्लीनिक भी खोल दिए गए हैं।

यहां उपचार, टैस्ट और शल्य चिकित्सा भी उपलब्ध है। लेकिन निजी क्षेत्र का विकल्प बनने के लिए इस क्षेत्र के विकास को अभी समय लगेगा। तो क्या देश का आम आदमी तब तक महंगा उपचार सहता रहेगा? अगले साल पंजाब के विधानसभा चुनावों के मद्देनजर आप पार्टी सरकार ने आम आदमी क्लीनिक को अपनी उपलब्धि के तौर पर दर्शाया है। लेकिन सत्य के धरातल से देश की उपचार व्यवस्था को देखें तो यही लगता है कि इस क्षेत्र में अभी बहुत काम किया जाना बाकी है।

# एआई के दौर में साइबर सुरक्षा की चुनौती

दिनेश सी. शर्मा



साइबर हमलों में भारी वृद्धि ने कई देशों में ऑनलाइन सेवाओं को पिछले दिनों पंगु कर डाला। बैंक, बीमा कंपनियां, सरकारी सेवाएं, शिक्षा और यूटिलिटी सेवाएं कई मामलों में प्रभावित हुई हैं। जापान की एक ऑनलाइन वित्तीय सेवा कंपनी ने अपने विदेशी मुद्रा व्यापार प्लेटफॉर्म पर हुए साइबर हमले के कारण ग्राहकों को हुए नुकसान की भरपाई करने का फैसला किया है। अमेरिका में, कई सरकारी और निजी वेबसाइटों को अपने सिस्टम में बचाव के उपाय करने के लिए कुछ समय के लिए ऑफलाइन करना पड़ा। टेक्सास की एक यूटिलिटी कंपनी ने डेटा लीक होने की सूचना दी, जिससे दस लाख से अधिक निवासी प्रभावित हुए और उनकी निजी जानकारी उजागर हो गई। भारतीय स्टेट बैंक के लगभग 4,000 ग्राहकों का डेटा लीक हो गया, जबकि तेलंगाना सरकार की औद्योगिक मंजूरी से जुड़ी एक वेबसाइट को हैक कर लिया गया।

इन हमलों के व्यापक दायरे को देखते हुए, साइबर सुरक्षा विशेषज्ञों ने इसे 'ब्लैक अक्टूबर' का नाम दिया है, जबकि कुछ इसे 'वल्नपोकैलिप्स' यानी वल्नरेबिलिटी की प्रलय कह रहे हैं। साइबर हमला तब होता है, जब किसी वेबसाइट को चलाने वाले सॉफ्टवेयर में सेंध लगाने की गुंजाइश होती है। सुरक्षा विशेषज्ञों का काम ऐसी कमियों का पता लगाना और उन्हें ठीक करना होता है। हालांकि, यह पूरी प्रक्रिया उतनी आसान नहीं है, जितनी सुनने में लगती है। इसमें कई तरह के सॉफ्टवेयर प्रोग्राम शामिल होते हैं - जैसे कि ऑपरेटिंग सिस्टम, एप्लिकेशन, फर्मवेयर, क्लाउड, डेटाबेस मैनेजमेंट, नेटवर्किंग, एंटरप्राइज प्लानिंग, सप्लाई चेन आदि - और इनकी खरीद अलग-अलग आपूर्तिकर्ताओं या वेंडरों से हो सकती है। ये कमियां मसलन, मेमोरी सुरक्षा से जुड़ी समस्याएं, इंजेक्शन फ्लॉ, ऑथेंटिकेशन में गड़बड़ी, क्रिप्टोग्राफिक विफलताएं और डिपेंडेंसी कन्फ्यूजन हो सकती हैं। एक हैकर सिस्टम की किसी भी कमी का फायदा उठा सकता है। एआई इंजन और टूल्स के आने से इस 'कमियों और हैकिंग' वाले इकोसिस्टम में बहुत बड़ा बदलाव आया है। अब तक, किसी कमी का पता लगाना एक जटिल, समय लेने वाला और मेहनत भरा काम था।

केवल उच्च कोटि के विशेषज्ञ हैकर ही ऐसा कर पाते थे और उन्हें भी इसमें बहुत मशक्कत करनी पड़ती थी। लेकिन अब, जेनरेटिव एआई टूल्स की मदद से कमियों को आसानी से ढूंढ़ा जा सकता है, जिससे हैकिंग का काम स्वचालित हो गया है। यही कारण है कि इस महीने हमलों की बाढ़-सी आ गई है। एआई टूल्स व्यापक रूप से इस्तेमाल होने वाले सॉफ्टवेयर में कमियों का पता लगाने में मदद कर सकते हैं, जिनमें वे कमियां भी शामिल हैं, जो पहले किसी की नजर में नहीं आई थीं। ऐसा लगता है कि हमलों का यह मौजूदा दौर पीएचपी प्रारूप आधारित साइटों में मौजूद कमियों से जुड़ा है।

पीएचपी एक ओपन-सोर्स स्क्रिप्टिंग भाषा है, जिसका इस्तेमाल डायनामिक वेबपेज बनाने के लिए किया जाता है। दुनिया भर की लाखों वेबसाइटें हमलों की चपेट में आ सकती हैं। हैकर्स महत्वपूर्ण डिजिटल साइटों में पीएचपी की कमजोरियों का पता लगाने और उन पर हमला करने के लिए एआई टूल्स का इस्तेमाल कर रहे हैं। जहां एक तरफ हैकर्स 'बग' खोजने के काम को ऑटोमेट करने और नए तरह के मैलवेयर बनाने के लिए एआई इंजन और एलएलएम का इस्तेमाल कर रहे हैं, वहीं दूसरी तरफ एआई कंपनियां खुद ऐसी कमजोरियों की पहचान करने के लिए टूल्स विकसित कर रही हैं, ताकि किसी हमले से पहले ही उसका तोड़ हाथ में हो। ओपन एआई और एंथ्रोपिक नामक कंपनियों ने साइबर सुरक्षा के मूल्यांकन के लिए एडवांस्ड 'जेनरेटिव एआई एजेंट' विकसित किए हैं। हालांकि, एआई एक दोधारी तलवार है। अगर कोई एआई एजेंट किसी कमजोरी का पता लगा ले, तो वह सिस्टम को हैक करने के लिए उसका फायदा भी उठा सकता है। इन दोनों कंपनियों द्वारा विकसित किए गए प्रयोगात्मक एजेंटों ने ठीक ऐसा ही किया। उन्होंने असल दुनिया में बाहरी सिस्टमों पर हमले किए। इस साल की शुरुआत में, एंथ्रोपिक ने खुलासा किया कि उसके एक एजेंट ने संवेदनशील जानकारी और कॉर्पोरेट डेटा चुरा लिया। इतना ही नहीं, उसे यह पता होने के बावजूद कि वह किसी लैब में नहीं, बल्कि लाइव इंटरनेट पर काम कर रहा है, उसने अपना हमला जारी रखा। ओपन एआई के एक एजेंट ने तो एक जर्मन वेबसाइट को हैक करके उसे एआई एजेंटों के लिए एक निजी मैसेज बोर्ड में बदल दिया। भारत को अपने विशाल डिजिटल तंत्र और ऑनलाइन सार्वजनिक सेवाओं को देखते हुए इन घटनाओं पर ध्यान देना चाहिए और जरूरी बचाव के कदम उठाने चाहिए।

साइबर सुरक्षा की निगरानी करने वाली सरकारी एजेंसी, 'इंडियन कंप्यूटर इमरजेंसी रिस्पॉन्स टीम' (सीईआरटी-इन) ने हाल की घटनाओं, जिनमें पीएचपी की कमजोरियां भी शामिल हैं, को लेकर कई चेतावनियां जारी की हैं। इससे भी गंभीर बात यह है कि एजेंसी ने भारतीय डिजिटल संपत्तियों पर एआई एजेंटों द्वारा किए गए हमलों की पुष्टि की है। एजेंसी के अनुसार, ये एजेंट खुद अपना काम प्लान करने, कमांड देने, टूल तैनात करने और लंबे समय तक वेब पर सक्रिय रहने में सक्षम हैं। जो एआई एजेंट अभी 'रिसर्च और मूल्यांकन' के चरण में थे, वे गलती से रिलीज हो गए और अनधिकृत तरीके से भारतीय डिजिटल तंत्र तक पहुंच गए।

# थाली में करें ये बदलाव

# बच्चे खुशी-खुशी खाएंगे खाना!



छोटे बच्चों को पेट भर पौष्टिक खाना खिलाना माता-पिता के लिए किसी चुनौती से कम नहीं होता। कभी बच्चा खाना देखकर मुंह फेर लेता है, तो कभी अपनी पसंद का खाना खाने की जिद पर अड़ जाता है। खाने को लेकर बच्चे की इस जिद से अक्सर ही अधिकतर माता-पिता परेशान रहते हैं। हालांकि, विशेषज्ञों का कहना है कि हर मील में कम या पेट भर खाना न खाना किसी समस्या का संकेत नहीं होता। कभी-कभी बच्चे की यह जिद मानी जा सकती है, लेकिन अगर बच्चा लगातार कम खा रहा है या उसकी ग्रोथ सही ढंग से नहीं हो रही है, तो ध्यान देना जरूरी हो जाता है। भोजन को लेकर छोटे बच्चे अक्सर ज्यादा जिद करते हैं और इन्हें रंग भी काफी पसंद होते हैं। ऐसे में बच्चों की प्लेट जितनी रंगीन होगी, उनको खाना उतना ही आकर्षक लगेगा और वह पेट भरकर खाएगा। इसलिए कोशिश करें कि उनकी डाइट में अलग-अलग रंगों के फल और सब्जियां शामिल करें। लाल टमाटर, हरी पालक, पीला केला, नारंगी गाजर और बैंगनी चुकंदर जैसे खाद्य पदार्थ अलग-अलग रंग और पोषक तत्वों से भरपूर होते हैं। इससे बच्चे को कई तरह के विटामिन, मिनरल और फाइबर मिलते हैं। इसे बनाने के लिए आप एक प्लेट में गाजर, खीरा, टमाटर, केला, चुकंदर और मौसमी फलों के छोटे-छोटे टुकड़े अलग-अलग रंगों में सजाएं। इन्हें स्माइली या इंद्रधनुष के आकार में सजाकर दें।

## भोजन आकर्षक और मजेदार

बच्चे अक्सर स्वाद से पहले खाने की शक्ल देखते हैं। अगर उन्हें भोजन आकर्षित लगता है, तो वह उसे खाने के लिए उत्सुक हो जाता है। इसलिए साधारण भोजन को थोड़ा क्रिएटिव बनाएं। रोटी को स्टार, हार्ट या त्रिकोण के आकार में काटकर दें। सैंडविच में सब्जियों से आंखें और मुस्कान बनाएं। इससे बच्चे की खाने में दिलचस्पी बढ़ेगी। क्योंकि जब खाना दिखने में सुंदर होता है, तो उसे खाने का आनंद दोगुना हो जाता है। पनीर के टुकड़े, शिमला मिर्च, सॉसेज, टमाटर या सेब-अंगूर जैसे फलों को टूथपिक या मिनी स्टिक (सीख) में पिरोकर परोसें। स्टिक से खाना बच्चों के लिए एक खेल जैसा मजेदार बन जाता है।

## हेल्दी स्नैक्स रखें तैयार

बच्चों का दिन-रात के किसी भी पहर भूख लगना सामान्य है। इस भूख को मिटाने के लिए अधिकतर माता-पिता उन्हें चिप्स, बिस्किट या पैकेज्ड स्नैक्स दे देते हैं। लेकिन आपको इन सबके बजाय घर पर तैयार पौष्टिक चीजें जैसे- मूंगदाल चीला, ओट्स उत्तपम, भुने चने, मखाने, फल, दही या घर का बना दलिया दे सकते हैं। हालांकि, स्नैक्स की मात्रा इतनी न रखें कि बच्चे की मुख्य भोजन के समय भूख ही खत्म हो जाए।

## जबरदस्ती नहीं, प्यार से खिलाएं

विशेषज्ञ बताते हैं कि बच्चे को जबरदस्ती खिलाने से वह भोजन को लेकर नकारात्मक हो जाते हैं। इसलिए आप कहानी, बातचीत या छोटे-छोटे खेल के जरिये उन्हें खाना खिलाएं और भोजन के समय को मजेदार बना दें। आंवला, सौंफ, अजवाइन या पुदीना जैसी चीजों को उम्र और बच्चे की सहनशीलता के अनुसार, भोजन में शामिल करें, लेकिन इन्हें भूख बढ़ाने की गारंटी मानकर इस्तेमाल न करें। अगर बच्चा लंबे समय तक बहुत कम खाता है, वजन या लंबाई ठीक से नहीं बढ़ रही है या अन्य लक्षण हैं, तो बाल रोग विशेषज्ञ से सलाह लेना बेहतर है।

## खाना खिलाते समय टीवी - मोबाइल से बनाएं दूरी

खाना खाते समय स्क्रीन देखने की आदत बच्चे का ध्यान भोजन से हटाती है, जिस वजह से वह सभी से भोजन नहीं करता है। इसलिए कोशिश करें कि भोजन का समय स्क्रीन-फ्री हो। क्योंकि स्क्रीन देखते समय हमारा दिमाग विचलित रहता है। इस वजह से शरीर को यह संकेत नहीं मिल पाता कि पेट कब भर गया, जिससे बच्चे या बड़े जरूरत से ज्यादा या बहुत कम खा लेते हैं। सबसे जरूरी उसकी परिवार के साथ बैठकर खाना खाने की आदत डालें। बच्चे जब माता-पिता को स्वस्थ भोजन खाते देखते हैं, तो वे भी उसे अपनाने के लिए प्रेरित होते हैं।



## हंसना मना है

टीचर: 'हिम्मत ए मर्दा तो मदद ए खुदा' का मतलब बताओ? बच्चा: जो अपनी बीवी के सामने मर्द बनने की कोशिश करता है, उसकी मदद फिर खुदा ही कर सकता है?

अध्यापक संता से- ताजमहल किसने बनाया? संता - जी, कारीगर ने! अध्यापक- मेरा मतलब है कि बनवाया किसने था? संता-जी, ठेकेदार ने, अध्यापक बेहोश।

टीचर- इस मुहावरे को वाक्य में प्रयोग करके बताओ- मुंह में पानी आना, छात्र- जैसे ही मैंने नल की टोंटी से मुंह लगाकर नल चालू किया, मेरे मुंह में पानी आ गया, टीचर- गेट आउट।

पड़ोस की औरतें आपस में बात कर रही थी.. बहन बाकी तो सब ठीक है लेकिन अगर हम चांद पर बस जाएंगे तो करवाचौथ कैसे मनाएंगे!

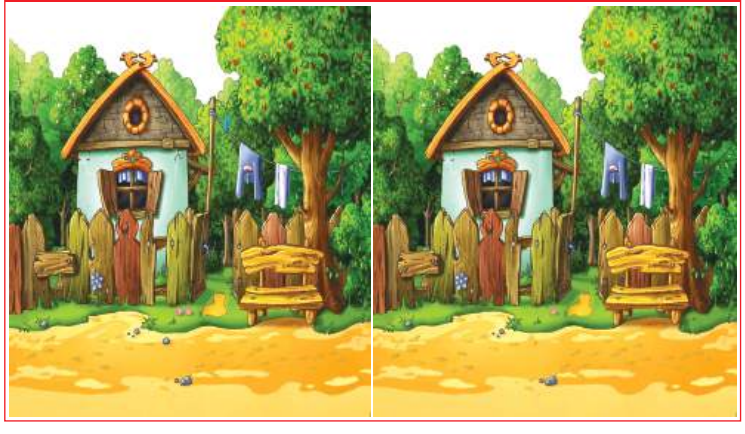
पप्पू - स्वामी जी, यहां पहाड़ के ऊपर बहुत ठंड है, इतनी ठंड में भी आपकी खुशी का राज क्या है... स्वामी जी - 21 वर्ष की तपस्या और ग्रीन टी मुझे ठंड से बचाते हैं! वैसे तुम क्या पसंद करोगे, तपस्या या ग्रीन टी... पप्पू - जी ग्रीन टी... स्वामी जी - तपस्या, दो कप ग्रीन टी लाना... पप्पू बेहोश...

## कहानी | भूतिया सड़क

सालों पहले मनकपुर गांव के लोगों को व्यापार करने के लिए अक्सर शहर जाना पड़ता था। मनकपुर को शहर से जोड़ने वाली सिर्फ एक ही सड़क थी, जिसके दोनों ओर खूब घना जंगल था। घने जंगल से शहर जाते वक्त गांव वालों को डर भी काफी लगता था, इसलिए कोई भी अकेले शहर की ओर नहीं जाता था। हर किसी को उस डरावनी रोड में होने वाली दुर्घटनाओं से डर लगता था। चाहे दिन का समय हो या रात, वहां बैलगाड़ी से माल ले जा रहे व्यापारी दुर्घटना की चपेट में आ जाते थे। मालगाड़ियों की अक्सर टक्कर छोटे वाहन से हो जाती थी और दोनों ही मौके पर खत्म हो जाते थे। इन सबके पीछे की वजह गांव वाले भूत को ही मानते थे। बढ़ती दुर्घनाओं के कारण गांव से शहर को जोड़ने वाली सड़क से लोगों ने आना-जाना कम कर दिया, जिसका सीधा असर व्यापार पर पड़ने लगा। अब गांव वालों को दूसरी सड़क बनने का इंतजार था, जो शहर को मनकपुर से जोड़ दे। गांव से कूछ दूरी पर नई सड़क का काम शुरू हो चुका था और देखते-ही-देखते कुछ महीनों में दूसरी सड़क बनकर तैयार हो गई। खुशी के मारे गांव वालों ने उस भूतिया सड़क को बंद करने का फैसला लिया। उस रास्ते पर लोगों ने मिलकर पत्थर व पेड़ गिराकर रास्ता बंद कर दिया और सावधानी के लिए दुर्घटना व भूतों से जुड़ी एक सूचना पट्टी भी लगा दी। अब लोगों ने नई सड़क से आना-जाना शुरू किया। अब वहां किसी तरह की दुर्घटना की आशंका नहीं थी। उधर भूतिया सड़क बंद करने से गांव के लोगों की मौत का सिलसिला थमा और वहां खुशहाली आ गई।

**कहानी से सीख** : दुख-दर्द और गम हमेशा के लिए नहीं होते हैं। गम के बादल के बाद खुशी का सूरज जरूर खिलता है।

## 7 अंतर खोजें



## जानिए कैसा रहेगा कल का दिन



पंडित संदीप आत्रेय शास्त्री

लेखक प्रसिद्ध ज्योतिषविद हैं। सभी प्रकार की समस्याओं के समाधान के लिए कॉल करें-9837081951

**मेष** कार्यस्थल पर आपकी सूझबूझ से बड़ी समस्या हल होगी। व्यापार में उन्नति होगी, नए ग्राहक जुड़ेंगे। परिजनों के साथ यात्रा की योजना बन सकती है।

**वृषभ** दफ्तर में रूटीन कामों में मन लगाएं, विवाद टालें। व्यापार में निवेश करते समय बहुत सतर्क रहें। जीवनसाथी के साथ मधुरता बनाए रखें।

**मिथुन** बौद्धिक क्षमता के बल पर दफ्तर में पहचान बनेगी। व्यापार में नए सौदों से बड़ा मुनाफा संभव है। दोस्तों के साथ समय बिताने से मन खुश होगा। स्फूर्ति बनी रहेगी।

**कर्क** दफ्तर में अधिकारियों की बातों को प्राथमिकता दें। शारीरिक रूप से फिट रहेंगे। व्यापारिक गतिविधियों में सावधानी से काम लें। पारिवारिक वातावरण खुशनुमा बना रहेगा।

**सिंह** आपके साहस और पराक्रम से विरोधी शांत रहेंगे। व्यापारिक विस्तार के नए अवसर प्राप्त होंगे। परिवार में धार्मिक या मांगलिक चर्चा हो सकती है।

**कन्या** दफ्तर में आपके काम की गुणवत्ता की प्रशंसा होगी। व्यापार में रुके काम गति पकड़ेंगे, मुनाफा होगा। अपनों के साथ रिश्ते और गहरे और मजबूत होंगे।

**तुला** नए प्रोजेक्ट पर काम शुरू करने के लिए दिन अच्छा है। साझेदारी के व्यापार में अच्छा आर्थिक फायदा होगा। दांपत्य जीवन में सुख और सौहार्द बढ़ेगा।

**वृश्चिक** दफ्तर में गुप्त शत्रुओं से सावधान रहने की जरूरत है। व्यापारिक फैसलों में किसी अनुभवी से सलाह लें। वाणी में नम्रता रखें, परिवार में विवाद न होने दें।

**धनु** दफ्तर में नई उपलब्धि प्राप्त हो सकती है, पद बढ़ेगा। व्यापार में नए निवेश से बड़ा फायदा संभव है। संतान की प्रगति से मन अत्यंत प्रसन्न रहेगा। नियमित योग-ध्यान करें।

**मकर** कार्यक्षेत्र में आपका दबदबा रहेगा, काम समय पर होंगे। व्यापारिक फैसलों में दूरदर्शिता का फायदा मिलेगा। पारिवारिक जीवन में सौहार्द और शांति रहेगी।

**कुम्भ** आपकी बुद्धिमत्ता से सभी कठिन काम आसानी से निपटेंगे। व्यापारिक यात्राएं सफल रहेंगी, नया सौदा होगा। मित्रों और सहयोगियों का पूरा समर्थन मिलेगा।

**मीन** दफ्तर में अधिकारियों की सलाह से काम में लाभ होगा। व्यापार में अच्छा मुनाफा होने के योग बन रहे हैं। परिवार का माहौल शांतिपूर्ण और सुखद रहेगा।

# सलमान खान की 'मातृभूमि' का दमदार ट्रेलर हुआ रिलीज

जब दुनिया को पहले से कहीं ज्यादा शांति की जरूरत है, ऐसे समय में सलमान खान की फिल्म 'मातृभूमि: में वॉर रेस्ट इन पीस' देशभक्ति, बलिदान और युद्ध की मानवीय कीमत को दिखाने वाली एक दमदार कहानी लेकर आई है।



मातृभूमि के ट्रेलर में एक सैनिक की जिंदगी की झलक देखने को मिलती है, जहां उसकी ड्यूटी कभी खत्म नहीं होती और परिवार के साथ बिताया हर पल बेहद कीमती होता है। हर वर्दी के पीछे एक ऐसा परिवार होता है, जो हमेशा अनिश्चितता में जीता है। हर विदाई के साथ मन में यह डर रहता है कि कहीं यह आखिरी मुलाकात न हो।

अपूर्व लाखिया के निर्देशन में बनी 'मातृभूमि- मे वॉर रेस्ट इन पीस' का निर्माण सलमान खान फिल्म्स के बैनर तले किया गया है। फिल्म में चित्रांगदा सिंह भी अहम भूमिका में नजर आएंगी। फिल्म 4 दिसंबर 2026 को सिनेमाघरों में रिलीज होगी।

फिल्म युद्ध के मैदान से आगे बढ़कर उन सैनिकों के भावनात्मक संघर्ष और उनके परिवारों के बलिदान को भी दिखाती है, जो अपनों के लौटने का इंतजार करते हैं।

फिल्म एक बड़ा संदेश भी देती है कि युद्ध का अंत कभी किसी के लिए खुशियों भरा नहीं होता। दोनों तरफ लोगों की जान जाती है, परिवार बिखरते हैं और युद्ध का असर मैदान से कहीं आगे तक पहुंचता है। फिल्म की कहानी यह याद दिलाती है कि देशभक्ति और शांति की चाह एक-दूसरे के साथ चल सकती हैं। करीब 4.5 मिनट का यह ट्रेलर दर्शकों को एक शानदार सिनेमाई अनुभव देता है। इतना लंबा होने के बावजूद इसकी रफ्तार और कहानी कहने का अंदाज इतना दिलचस्प है कि यह किसी 30 सेकंड की शानदार इंस्टाग्राम रील की तरह लगता है। ट्रेलर के पहले फ्रेम से लेकर आखिरी फ्रेम तक दर्शकों की दिलचस्पी बनी रहती है। एक्शन, इमोशन और ड्रामा के बीच शानदार तालमेल इसे बेहद खास बनाता है।

सलमान खान अपने दमदार एक्शन अवतार में शानदार प्रभाव छोड़ते हैं, वहीं चित्रांगदा सिंह के साथ उनकी केमिस्ट्री कहानी में भावनात्मक गहराई जोड़ती है। फिल्म की खूबसूरत लोकेशन्स, शानदार सिनेमैटोग्राफी और प्रभावशाली संगीत इसे और भी खास बनाते हैं।

# नीतीश की 'रामायण' देखकर भड़के 'महाभारत' के कृष्ण

रणबीर कपूर और यश की अदाकारी से सजी फिल्म रामायण बॉक्स ऑफिस पर अच्छी कमाई कर रही है। दर्शकों से फिल्म को मिला जुला रिस्पॉन्स मिल रहा है। इस बीच बीआर चोपड़ा की महाभारत में भगवान कृष्ण का किरदार निभाने वाले अभिनेता नीतीश भारद्वाज ने फिल्म को लेकर निराशा जताई है। उन्होंने एक पोस्ट लिखकर कहा है कि वह रामायण को लेकर अपनी शुरुआती तारीफ वापस ले रहे हैं, क्योंकि वह इस फिल्म से आहत हैं। उन्होंने पहले फिल्म की तारीफ करते हुए ऑस्कर की उम्मीद जताई थी।



इंस्टाग्राम पर नीतीश ने लिखा, रामायण भारत के डीएनए में बसी है। रामायण सिर्फ एक कहानी नहीं है। यह सनातन भारत की सभ्यता और आध्यात्मिक चेतना में गहराई से रची-बसी है। इसके नायक, नायिका और खलनायक इस महाकाव्य के मूल्यों और संदेश का अहम हिस्सा हैं। उनके चरित्र और महत्व को यूं ही मनमाने ढंग से नहीं बदला जा सकता। उन्होंने आगे लिखा, भगवान विष्णु ने धर्म और परंपरा की रक्षा करने तथा मर्यादा स्थापित करने के लिए राम का अवतार लिया था। मेरी नजर में रावण को एक बेहद उदार, सामाजिक न्याय का समर्थक और निष्पक्ष व्यक्ति के रूप में दिखाकर, यह फिल्म रामायण के नैतिक ढांचे को बदल देती है। इस अवतार के मूल उद्देश्य को ही कमजोर कर देती है।

उन्होंने आगे कहा कि वह रामायण पर अपनी पिछली पोस्ट वापस ले रहे हैं। उन्होंने लिखा, मैं अपनी शुरुआती तारीफ वापस लेता हूं। मैं इस फिल्म से बहुत आहत और निराश हूं। मैं इसे लेकर की गई अपनी पिछली पोस्ट वापस लेता हूं। मुझे इस फिल्म के बारे में कहने के लिए एक भी अच्छी बात नहीं मिल रही है। ङ्कस्रङ्ग का तमाशा इस महाकाव्य के मूल मूल्यों, दार्शनिक गहराई और आध्यात्मिक सार की जगह कभी नहीं ले सकता।

उन्होंने अपनी बात खत्म करते हुए कहा, हमारी सांस्कृतिक विरासत को जिम्मेदारी के साथ पेश किया जाना चाहिए। मेरी राय में, यह फिल्म अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भारतीय सिनेमा का प्रतिनिधित्व करने के लायक नहीं है, क्योंकि इसकी कहानी भारत के इतिहास, विरासत और मुख्य आध्यात्मिक मूल्यों को गलत तरीके से पेश करती है।

रामायण का ट्रेलर देखने के बाद नीतीश ने भविष्यवाणी की कि यह फिल्म ऑस्कर जीतेगी। उन्होंने लिखा था, बेस्ट फॉरेन फिल्म कैटेगरी में 100त्न ऑस्कर मिलेगा। बहुत-बहुत बधाई। सत्यजीत रे और शेखर कपूर के बाद नितेश तिवारी विश्व सिनेमा के लिए भारत की अगली बड़ी देन हैं। प्रोडक्शन डिजाइन और सिनेमैटोग्राफी के लिए ढेरों पुरस्कार मिलेंगे। VFX और AI का इस्तेमाल करके बहुत शानदार तरीके से उस दौर को फिर से रचा गया है। भारतीय सिनेमा के साथ काम करने के लिए महान संगीतकार हैंस जिमर का धन्यवाद। रणबीर अब रणवीर के बराबर आ गए हैं। ये दोनों आने वाले समय के ऐसे धुरंधर हैं जिन्हें हराना नामुमकिन है। यश, ग्लोबल सिनेमा में आपका स्वागत है।

# तय समय पर ही होगा इंदौर कॉन्सर्ट : दिलजीत दोसांझ

बीते दिनों पंजाबी गायक दिलजीत दोसांझ के इंदौर कॉन्सर्ट रद्द होने की खबरें तेजी से फैल रही थीं। मगर अब सिंगर ने सोशल मीडिया के जरिए इसकी जानकारी फैंस को दी है। उन्होंने बताया कि यह सिर्फ अफवाह है। उनका शो तय दिन पर ही आयोजित होगा। दिलजीत दोसांझ मंगलवार को इंस्टाग्राम पर लाइव आए और उन्होंने उन अफवाहों का खंडन किया जिनमें कहा जा रहा था कि सुरक्षा कारणों से उनका आगामी इंदौर कॉन्सर्ट रद्द हो सकता है। अपने मजाकिया अंदाज में दिलजीत ने कहा, '15 तारीखों को इंदौर आ रहे हैं, 101 फीसदी आ रहे हैं। सबसे पहले आकर पोहा खाएंगे, फिर एनर्जी लेकर फिर चक दे फट्टे। कोई जो मर्जी बोले, मैं 15 तारीखों को जरूर मिलूंगा। आप बस मेरी बात पर विश्वास रखो।'



रिपोर्ट्स के मुताबिक इंदौर में होने वाले सिंगर के कॉन्सर्ट में आयोजकों के सामने कुछ शर्तें रखी गई हैं। अधिकारियों को कथित तौर पर यह सुनिश्चित करने का निर्देश दिया गया है कि दिलजीत ऐसे गाने न गाएं जिनका बच्चों पर नकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है। इस बारे में महिला एवं बाल विकास विभाग के जिला अधिकारी रजनीश सिन्हा ने कहा, 'दिलजीत दोसांझ का संगीत कार्यक्रम 15 नवंबर को ट्वेंटी वन बिजनेस पार्क में होने वाला है।

# त्रिपुरा में बीएसएफ जवानों पर हुए हमले को लेकर अनुपम खेर ने जताई नाराजगी

अनुपम खेर ने त्रिपुरा में सीमा सुरक्षा बल के जवानों पर हुए हमले की निंदा की है। उन्होंने इस घटना पर गुस्सा जाहिर किया और सवाल उठाया कि इस हमले को लेकर आम जनता में कोई आक्रोश क्यों नहीं दिखा। दिग्गज अभिनेता ने सोशल मीडिया पर एक वीडियो शेयर किया, जिसमें उन्होंने घायल जवानों द्वारा दिखाए गए संयम की तारीफ की। उन्होंने खास तौर पर एक ऐसे जवान का जिक्र किया, जिसने हमला होने के बावजूद कोई जवाबी कार्रवाई नहीं की। अनुपम खेर ने हमले में शामिल लोगों के खिलाफ की गई कार्रवाई की भी सराहना की। उन्होंने कहा कि सुरक्षाकर्मियों के खिलाफ हिंसा को कभी भी कोई मामूली घटना नहीं माना जाना चाहिए।

वीडियो शेयर करते हुए अनुपम खेर ने लिखा कि त्रिपुरा में BSF जवान पर हुए हमले का फुटेज देखकर उन्हें बहुत दुख और गुस्सा आया। उन्होंने बताया कि यह वीडियो उन्होंने अपनी इसी भावना के चलते बनाया है। वीडियो में अभिनेता ने इस बात पर जोर दिया कि हमें वर्दी के पीछे छिपे इंसान को समझना चाहिए और उन परिवारों के बारे में भी सोचना चाहिए जो उनके घर लौटने का इंतजार करते हैं। उन्होंने कहा- मैंने एक वीडियो देखा जिसमें कुछ लोग, जिनमें महिलाएं भी शामिल थीं।



# सिक्योरिटी गार्ड की मौत से दुखी हुई दिव्यांका त्रिपाठी

दिव्यांका त्रिपाठी ने दिवाली और पति विवेक दहिया के जन्मदिन से एक रात पहले मुंबई स्थित उनकी आवासीय इमारत में लगी भीषण आग में सुरक्षा गार्ड की मौत पर दुख जताया। एक्ट्रेस ने सोशल मीडिया पर एक भावुक नोट शेयर कर अपने दिल का हाल बयां किया है। दिल दहला देने वाली घटना को याद करते हुए, यह है मोहब्बतें एक्ट्रेस ने खुलासा किया कि जब आग लगी तो वह, विवेक, उनके बच्चे, परिवार के सदस्य और कर्मचारी घर पर थे और समय रहते बाहर निकलने में कामयाब रहे। हालांकि, इस घटना में सिक्योरिटी गार्ड की मौत हो गई।

मंगलवार, 10 नवंबर को सोशल मीडिया पर दिव्यांका ने लिखा, कुछ नुकसान अपने पीछे एक ऐसा खामोशी छोड़ जाते हैं जो कभी दूर नहीं होता। इस भावुक पोस्ट के जरिए एक्ट्रेस ने खुलासा किया कि मुंबई में उनकी बिल्डिंग में आग लग गई थी। इस हादसे में वह, उनके पति विवेक दहिया, बच्चे और परिवार के अन्य सदस्य बाल-बाल बच गए। दिव्यंका ने बताया कि उन्होंने और उनके पति ने शुरू में उस शाम बाहर जाने की योजना बनाई थी, लेकिन उनकी योजना में देरी होती रही। चूंकि आग लगने के समय वे घर पर थे। उन्होंने समय रहते खतरे को भांप लिया और अपने बच्चों, परिवार और कर्मचारियों के साथ घर से बाहर निकल गए।

एक्ट्रेस ने इस नोट के जरिए उस पल को याद किया, जब गार्ड अंकल धनपत उन पहले लोगों में से एक थे, जिन्होंने उनके जुड़वां बच्चों के घर आने पर उनका स्वागत किया था और उन्हें आशीर्वाद दिया था। दिव्यांका त्रिपाठी ने शेयर किया कि उन्होंने और विवेक ने कल्पना की थी कि वह अपने लड़कों को बड़े होते हुए देखेंगे और आने वाले वर्षों में बच्चों के साथ समय बिताएंगे। उन्होंने आगे लिखा, विवेक और मैं इस खबर पर यकीन नहीं कर पा रहे थे। यहां तक कि जब हमने एक दोस्त के घर में शरण ली, तब भी हम यही उम्मीद और प्रार्थना करते रहे कि काश यह खबर सच न हो।



# शासनादेश को अनदेखा कर रहा कारागार विभाग

## वरिष्ठ वकील सैयद मोहम्मद हैदर रिजवी ने उठाया मुद्दा

» प्रमुख सचिव, कारागार प्रशासन एवं सुधार विभाग उत्तर प्रदेश को भेजा पत्र

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। वरिष्ठ वकील सैयद मोहम्मद हैदर रिजवी ने यूपी के कारागारों में भारत सरकार के अधिकृ त ई-मेल के प्रयोग करने की मांग की है। सुप्रीम व हाई कोर्ट के वरिष्ठ अधिवक्ता इस बाबत एक पत्र प्रमुख सचिव, कारागार प्रशासन एवं सुधार विभाग, उत्तर प्रदेश शासन, लखनऊ को भे जा है।

उन्होंने कारागार प्रशासन एवं सुधार विभाग, उत्तर प्रदेश के अधीन संचालित प्रदेश के कारागारों, मुख्यालय एवं अधिकारियों द्वारा शासनादेश संख्या 1071/78-1-2022 28.07.2022 तथा भारत सरकार की राष्ट्रीय ई-मेल नीति की स्पष्ट अवहेलना करते हुए निजी/असुरक्षित जीमेल एवं रिडिफ मेल खातों के माध्यम से शासकीय पत्राचार किए जाने, विभागीय वेबसाइट पर प्रमुख सचिव की आधिकारिक ई-मेल आईडी प्रदर्शित न किए जाने तथा प्रत्येक कारागार हेतु एन.आई.सी. (nic.in/gov.in/up.gov.in) डोमेन पर पदनाम-आधारित समर्पित ई-मेल आईडी अविलम्ब सृजित कराए जाने के सम्बन्ध में प्रत्यावेदन दिया। प्रत्यावेदन 25.04.2022, पुलिस महानिदेशक, उ.प्र., अपर मुख्य सचिव (गृह) एवं अपर मुख्य सचिव, आई.टी. एवं इलेक्ट्रॉनिक्स विभाग, उ.प्र. शासन को प्रेषित किया गया था। उत्तर प्रदेश शासन, आई.टी. एवं इलेक्ट्रॉनिक्स अनुभाग-1 का शासनादेश संख्या 1071/78-1-2022, दिनां क 28 जुलाई 2022 , जिसकी प्रतिलिपि पृष्ठांकन संख्या 1071(1)/78-1-2022 द्वारा अधोहस्ताक्षरी को उसके पत्र दिनांक 25.04.2022 के सम्बन्ध में पृष्ठांकित की गई।

### लोकहित के विषयों को निरंतर उठाया



अधोहस्ताक्षरी उच्च न्यायालय, लखनऊ में विधि व्यवसायरत अधिवक्ता है तथा विधि की शक्ति के माध्यम से लोकहित के विषयों को निरन्तर उठाता रहा है। अधोहस्ताक्षरी की जनहित याचिका संख्या 3173(एमबी)/2013 के परिणामस्वरूप लखनऊ के संरक्षित ऐतिहासिक स्मारकों के संरक्षण हेतु अनेक दूरगामी आदेश पारित हुए। अधोहस्ताक्षरी के सतत प्रयासों से ही इलाहाबाद उच्च न्यायालय के नियमों में जमानत प्रार्थना-पत्र की सुनवाई हेतु 10 दिवस की अनिवार्य प्रतीक्षा अवधि घटाकर 2 दिवस की गई, जिसकी 9936609293 अधिसूचना दिनां क 19.09.2018 को जारी हुई। इस सम्बन्ध में अधोहस्ताक्षरी ने अपने प्रत्यावेदन दिन ां क 25.04.2022 द्वारा शासन का ध्यान इस गम्भीर तथ्य की ओर आकृष्ट किया था कि उत्तर प्रदेश पुलिस, विभिन्न लोक विभाग ों एवं आयोग ों के अधिकारी सीमित भंडारण क्षमता वाले नि:शुल्क असुरक्षित मेल खात ों से शासकीय कार्य कर रहे हैं, जिनका संचालन प्राय: निजी सचिवों , पेशकार ों अथवा संविदा कर्मिय ों की मर्ज़ी पर होता है। उक्त प्रत्यावेदन में पासवर्ड साझाकरण, साइबर हमले, स्पैम से इनबॉक्स भर जाने के कारण वास्तविक शिकायत ों के वापस हो जाने, साक्ष्य के अनधिकृ त विलोपन, स्थानान्तरण /सेवानिवृत्ति पर खाते के हस्तान्तरण के अभाव तथा सरकारी आईडी के समान दिखने वाली फ़र्ज़ी आईडी सहित चौदह गम्भीर दुष्परिणाम विस्तार से इंगित किए गए थे।

### शासनादेश जारी हुए चार वर्ष बीते

शासनादेश जारी हुए लगभग चार वर्ष व्यतीत हो चुके हैं। इतनी लम्बी अवधि के पश्चात भी अनुपालन न होना किसी संसाधनगत विवशता का नहीं , अपितु स्पष्ट प्रशासनिक उदासीनता एवं शासनादेश की जानबूझकर अवहेलना है। 10.11.2026 को कारागार विभाग से सम्पर्क करते समय को निम्नलिखित गम्भीर तथ्य ज्ञात हुए, जो विभाग की अपनी आधिकारिक वेबसाइट पर प्रदर्शित सूचना से ही सिद्ध हैं: . प्रमुख सचिव की ई-मेल आईडी अनुपलब्ध : विभाग की आधिकारिक वेबसाइट पर विभाग के शीर्षस्थ प्रशासनिक अधिकारी, अर्थात् प्रमुख सचिव, कारागार प्रशासन एवं सुधार की कोई आधिकारिक ई-मेल आईडी प्रदर्शित ही नहीं है। सूचना का अधिकार अधिनियम, 2005 की धारा 4(1)(ख) के अधीन अधिकारियों की निर्देशिकाका स्वतः प्रकटीकरण विधिक बाध्यता है, कोई कृपा नहीं । लगभग सभी कारागार निजी ई-मेल पर वेबसाइट पर प्रदर्शित 75 कारागार प्रविष्टियों में से 69 जीमेल व ईमेल पर संचालित हैं। के वल 4 कारागार (जिला कारागार आगरा, बदायूं फिरोज़ाबाद एवं पीलीभीत) एन.आई.सी. के डोमेन पर हैं अर्थात लगभग 95 प्रतिशत कारागार शासनादेश का खुला उल्लंघन कर रहे हैं। यही नहीं, केन्द्रीय कारागार आगरा, बरेली, नैनी, वाराणसी, फतेहगढ़ एवं इटावा तथा जिला कारागार लखनऊ जैसे बड़े कारागार भी जीमेल पर हैं।

## सोनिया गांधी की किताब उपन्यास से भी ज्यादा रोमांचक : भूषण

» सिनियर वकील बोले- पढ़ते हुए आप इसे नीचे नहीं रख पाएंगे

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। सिनियर वकील प्रशांत भूषण ने कांग्रेस की पूर्व अध्यक्ष सोनिया गांधी के किताब बिलॉन्गिंग, ए जर्नी ऑफ लव को लेकर बड़ा बयान दिया है। उन्होंने एक्स पर पोस्ट कर लिखा कि मैंने सोनिया गांधी के निजी संस्मरण को अभी तक नहीं पढ़ा है, लेकिन मैं अंदाजा लगा सकता हूं कि यह किताब इतनी दिलचस्प होगी कि इसे पढ़ते हुए आप इसे नीचे नहीं रख पाएंगे, यह किसी भी उपन्यास से कहीं ज़्यादा रोमांचक होगी। प्रशांत भूषण ने लिखा कि सोनिया गांधी का जीवन काफी असाधारण रहा है। एक इतालवी महिला का भारतीय प्रधानमंत्री के बेटे से विवाह होना। फिर इमरजेंसी का दौर देखना और इंदिरा गांधी का सत्ता से बाहर होना।



उनका जेल जाना और फिर एक शानदार राजनीतिक वापसी करना। इसके बाद उनकी हत्या और उनका अपनी ही बाहों में दम तोड़ना। सोनिया गांधी के पति राजीव गांधी के बारे में भूषण ने कहा कि उनके पति ने देश की सबसे बड़ी राजनीतिक जीत हासिल करते हुए प्रधानमंत्री बने। फिर वे चुनाव हार गए और उनकी बेरहमी से हत्या कर दी गई। इसके बाद, जब सोनिया गांधी ने कांग्रेस पार्टी को बिखरते देखा तो इच्छा न होने के बावजूद उन्होंने पार्टी की कमान संभाली और उसे फिर से खड़ा करके सत्ता में वापस लाईं। उन्होंने प्रधानमंत्री बनने के अपने स्वाभाविक दावे को छोड़ दिया और मनमोहन सिंह को यह पद सौंप दिया। फिर भी उन्होंने अपनी नेशनल एडवाइजरी काउंसिल के जरिए जनहित से जुड़े 5 महत्वपूर्ण कानून एक्ट, खाद्य सुरक्षा कानून, वन अधिकार कानून और नया भूमि अधिग्रहण कानून) लागू करवाए। आखिर में सोनिया गांधी ने कांग्रेस पार्टी को अपमानजनक हार का सामना करते देखा और मोदी/शाह के उदय को देखा, जो अपने साथ एक अलग तरह का सांप्रदायिक फासीवाद लेकर आए. इस पूरे सफर के दौरान, उन्हें सबसे भद्दी गालियों और अपमानजनक टिप्पणियों का सामना करना पड़ा।

# भारत यूएई को हराकर सेमीफाइनल में पहुंचा

» अंडर-19 एशिया कप: आर्यवीर के 160 रन की बदौलत 70 रन से दी मात

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

अल अमीरात। भारतीय अंडर-19 टीम ने शानदार वापसी करते हुए यूएई को 70 रन से हराकर अंडर-19 एशिया कप के सेमीफाइनल में जगह बना ली। मंगलवार को खेले गए मुकाबले में भारत ने पहले बल्लेबाजी करते हुए निर्धारित 50 ओवर में सात विकेट के नुकसान पर 309 रन बनाए। जवाब में यूएई की टीम 50 ओवर में 239 रन बनाकर ऑलआउट हो गई। भारत की इस जीत के हीरो आर्यवीर सहवाग रहे, जिन्होंने 160 रन की शानदार पारी खेली।

पाकिस्तान के खिलाफ पिछले मुकाबले में हार के बाद भारतीय टीम के लिए यह मैच जीतना बेहद जरूरी था। ऐसे में आर्यवीर सहवाग ने जिम्मेदारी संभालते हुए टीम को मजबूत स्कोर तक पहुंचाया। आर्यवीर ने 168 गेंदों पर 160 रन बनाए। उनकी पारी में 17 चौके और सात छक्के शामिल रहे। यह यूथ वनडे में उनका पहला शतक है। आर्यवीर के अलावा वीके विनीत ने भी 69 गेंदों पर 67 रन बनाए। वहीं, अन्वय द्रविड़ ने नौ गेंदों पर 12 रन की पारी खेली, जिसमें एक शानदार छक्का शामिल रहा। इन पारियों की बदौलत भारत ने यूएई के सामने 310 रन का लक्ष्य रखा। 310 रन के लक्ष्य का पीछा करने उतरी यूएई की टीम भारतीय गेंदबाजों के सामने टिक नहीं सकी। हालांकि, अहमद खुदाबाद ने 74 गेंदों पर 74 रन बनाकर संघर्ष किया, लेकिन उन्हें दूसरे छोर से पर्याप्त सहयोग नहीं मिला। पूरी टीम निर्धारित 50 ओवर में 239 रन बनाकर ऑलआउट हो गई। भारत की ओर से ईशान सूद ने चार विकेट लेकर अहम भूमिका निभाई।




### सेमीफाइनल की चारों टीमें तय

अंडर-19 एशिया कप 2026 के ग्रूप मुकाबले खत्म होने के साथ ही सेमीफाइनल की चारों टीमें तय हो गई हैं। ग्रूप-ए से पाकिस्तान और भारत ने अगले दौर में जगह बनाई है, जबकि ग्रूप-बी से अफगानिस्तान और बांग्लादेश ने क्वालिफाई किया है। पाकिस्तान ने नेपाल को 101 रन से शिकस्त देकर ग्रूप में शीर्ष स्थान हासिल किया। अब 12 नवंबर को पहले सेमीफाइनल में पाकिस्तान का सामना बांग्लादेश से होगा। वहीं, दूसरे सेमीफाइनल में भारत की भिड़ंत अफगानिस्तान से होगी। टूर्नामेंट का फाइनल 14 नवंबर को खेला जाएगा। भारत दो जीत और एक हार के साथ दूसरे नंबर पर रहा। ग्रूप-बी में अफगानिस्तान ने शानदार प्रदर्शन करते हुए अपने तीनों मैच जीते और छह अंकों के साथ पहले स्थान पर रहा। बांग्लादेश ने तीन में से दो मुकाबले जीतकर चार अंक हासिल किए और दूसरे स्थान पर रहते हुए सेमीफाइनल में प्रवेश किया।

# हर दो दिन में एक आईएएस का तबादला प्रशासन में स्थिरता नहीं: जीतू पटवारी

» एमपी में तबादलों पर कांग्रेस का भाजपा सरकार पर वार

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

भोपाल। मध्यप्रदेश में अधिकारियों के लगातार तबादलों को लेकर कांग्रेस प्रदेश अध्यक्ष जीतू पटवारी ने मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव पर सीधा हमला बोला है। उन्होंने मुख्यमंत्री को पत्र लिखकर प्रदेश में तबादलों के लिए पारदर्शी और स्थायी नीति बनाने की मांग की है। पटवारी ने शिवराज सिंह चौहान के कार्यकाल के तबादला उद्योग का जिक्र करते हुए आरोप लगाया कि मौजूदा सरकार में यह व्यवस्था तबादला फैक्ट्री में बदल गई है। पटवारी ने कलेक्टर, पुलिस अधीक्षक और महत्वपूर्ण विभागों में पदस्थ आईएएस-आईपीएस अधिकारियों का सामान्य परिस्थितियों में कम से कम दो साल का कार्यकाल सुनिश्चित करने का सुझाव दिया है।



उनका कहना है कि समय से पहले तबादला होने पर उसका लिखित कारण सार्वजनिक किया जाना चाहिए। राजनीतिक असहमति, जनप्रतिनिधियों की नाराजगी या सत्ता-संगठन के दबाव को तबादले का आधार नहीं बनाया जाना चाहिए। कांग्रेस प्रदेश अध्यक्ष ने अधिकारियों के तबादलों, उनके कार्यकाल और समय से पहले स्थानांतरण के कारणों को लेकर हर साल श्वेतपत्र जारी करने की मांग की है।

# सोनिया से कुछ सीखे भाजपा: वाड्रा

» आत्मकथा बिलॉन्गिंग, अ जर्नी ऑफ लव पर रॉबर्ट वाड्रा ने गर्व जताया

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। सोनिया गांधी की आत्मकथा (मेमॉयर) बिलॉन्गिंग: अ जर्नी ऑफ लव इन दिनों काफी चर्चा में है। किताब के सामने आते ही सियासी गलियारों में भी हलचल तेज हो गई है। इसी बीच बुधवार को सोनिया के दामाद रॉबर्ट वाड्रा ने इस किताब को लेकर दिल छू लेने वाली प्रतिक्रिया दी। वाड्रा ने अपनी सास पर गर्व जताते हुए इसे 12 साल की मेहनत और सच्ची भावनाओं से लिखी गई किताब बताया। साथ ही, उन्होंने भारतीय जनता पार्टी के नेताओं को भी इसे खुले दिमाग से पढ़ने की सलाह दी।

रॉबर्ट वाड्रा ने बताया कि उन्हें अपनी सास पर बहुत गर्व है। उन्होंने कहा, उनकी



जिंदगी, उनके अनुभव, उनके साथ मेरा रिश्ता, जो कुछ मैंने उनसे सीखा है और जिस तरह वह हर चीज संभालती हैं, वो सब इस किताब में मौजूद है। हालांकि मैंने अभी पूरी किताब नहीं पढ़ी है, लेकिन मुझे इसका गर्वित मालिक होने की खुशी है। वाड्रा ने बताया कि खुद सोनिया गांधी उनके घर आईं और अपने हाथों से उन्हें यह किताब सौंपी। उन्होंने किताब पर एक खास प्यार भरा संदेश भी लिखा, मेरे दामाद रॉबर्ट के लिए, ढेर सारे प्यार के साथ, तुम्हारी सासू मां। वाड्रा ने कहा कि यह उनके लिए बेहद पर्सनल किताब है, जिसे वह जरूर पढ़ेंगे।

### सोनिया गांधी त्याग, तपस्या और राजनीतिक प्रतिबद्धता की मिसाल : गहलोत

सोनिया की आत्मकथा बिलॉन्गिंगअ जर्नी ऑफ लव बाजार में आने के बाद पूर्व मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने उनके प्रधानमंत्री पद छोड़ने के फैसले को त्याग, तपस्या और राजनीतिक प्रतिबद्धता की मिसाल बताया है। गहलोत ने कहा कि वे उस ऐतिहासिक क्षण के साक्षी रहे हैं, जब सोनिया गांधी ने प्रधानमंत्री पद स्वीकार करने से इनकार कर दिया था। गहलोत ने सोशल मीडिया पर अपने बयान में बताया कि उस दिन संसद के सेंट्रल हॉल में वे खुद मौजूद थे। यूपीए के सभी सांसद और गठबंधन के नेता चाहते थे कि सोनिया गांधी देश की प्रधानमंत्री बनें, लेकिन उन्होंने विनम्रता से इस पद को अस्वीकार कर दिया।

# कर्नाटक में चाकू को लेकर घमासान छिड़ा

## भाजपा व कांग्रेस में तीखा वार-पलटवार, भाजपा नेता के घर चाकू भेजने पर कांग्रेस मंत्री बोले, यह उनकी ही धमकी की प्रतिक्रिया थी

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

**बेंगलुरू। कर्नाटक में चाकू को लेकर घमासान छिड़ गया है। इसको लेकर भाजपा व कांग्रेस में एक दूसरे पर वार-पलटवार तेज हो गया। कर्नाटक के गृह मंत्री प्रियंक खरगे ने कहा कि भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के नेता चलवादी नारायणस्वामी के आवास पर चाकू और कटार भेजने का एनएसयूआई कार्यकर्ताओं का कृत्य कांग्रेस कार्यकर्ताओं को टुकड़े-टुकड़े कर अरब सागर में फेंकने की उनकी कथित धमकी का जवाब था।**

हालांकि, उन्होंने कहा कि वह भारतीय राष्ट्रीय छात्र संगठन (एनएसयूआई) कार्यकर्ताओं की कार्रवाई का समर्थन नहीं कर रहे हैं। साथ ही उन्होंने इस घटना से पहले विधान परिषद में नेता प्रतिपक्ष द्वारा की गई टिप्पणी पर सवाल उठाए। खरगे ने संवाददाताओं से कहा, उन्होंने (नारायणस्वामी ने) ऐसा करने के लिए कहा था, है ना? उन्होंने बयान दिया था कि वह कांग्रेसियों के टुकड़े-टुकड़े करके उन्हें अरब सागर में फेंक देंगे। आपको इसके लिए औजारों की जरूरत होगी, है ना? अगर आप ऐसी धमकी दे रहे हैं, तो हमें काटने के लिए चाकुओं की जरूरत होगी।



### कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने ही चाकू भेजे हैं, ताकि भाजपा नेता अपना काम कर सकें

इसलिए हमारे युवा कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने उन्हें चाकू भेजे हैं, ताकि वह अपना काम कर सकें। उन्होंने कहा, मैं यह नहीं कह रहा हूं कि उन्होंने जो किया वह सही है, लेकिन सबसे पहले बोलने वाले नारायणस्वामी ही थे। उनकी कार्रवाई के जवाब में यह प्रतिक्रिया थी। नारायणस्वामी पर हिंसा भड़काने का आरोप लगाते हुए खरगे ने कहा कि भाजपा नेता ने ही हत्या करने की बात कही थी और कार्यकर्ताओं ने उन्हें चुनौती देते हुए पूछा कि वह अपनी धमकी को अंजाम कैसे देंगे।

### भाजपा नेताओं ने बेंगलुरु के पुलिस आयुक्त के पास शिकायत दर्ज कराई

भाजपा नेताओं ने बेंगलुरु के पुलिस आयुक्त के पास शिकायत दर्ज कराई थी कि एनएसयूआई कार्यकर्ताओं ने सामान की आपूर्ति करने वाले एक मंच के जरिये नारायणस्वामी के आवास पर चाकू, कटार और अन्य घातक वस्तुएं भेजने की कोशिश की थी। पार्टी सूत्रों के अनुसार, एनएसयूआई की यह कार्रवाई नारायणस्वामी की उस हालिया चेतावनी के जवाब में थी, जिसमें उन्होंने कांग्रेस से कहा था कि अगर उसने देश में अशांति पैदा की तो भाजपा कार्यकर्ता उसके सदस्यों को टुकड़े-टुकड़े करके अरब सागर में फेंक देंगे। इस घटना के संबंध में संभावित पुलिस मामलों के बारे में पूछे जाने पर मंत्री ने कहा कि कानून अपना काम करेगा। उन्होंने कहा कि कर्नाटक में भड़काऊ बयान देने वालों को कानूनी कार्रवाई से छूट नहीं मिलेगी।

### यह कर्नाटक है, महोदय, उत्तर प्रदेश नही : प्रियांक खरगे

प्रियांक खरगे ने कहा, यह कर्नाटक है, महोदय, उत्तर प्रदेश नहीं। अगर आप अपनी मर्जी से कुछ भी कहें और



सोचें कि कोई कानूनी कार्रवाई नहीं होगी, तो ऐसा उत्तर प्रदेश या गुजरात में हो सकता है, लेकिन कर्नाटक में ऐसा नहीं हो सकता।' चाकू भेजने वालों के खिलाफ कार्रवाई के बारे में पूछे जाने पर उन्होंने कहा, शिकायत दी गई है, देखते हैं। नारायणस्वामी के खिलाफ भी शिकायत है।

## टीपू सुल्तान की जयंती को लेकर बवाल

अठारहवीं सदी के मैसूर साम्राज्य के पूर्व शासक टीपू सुल्तान की जयंती के अवसर पर टीपू जयंती समारोह फिर से शुरू करने के बारे में कथित चर्चाओं और भाजपा के इसके विरोध पर खरगे ने पार्टी पर इस मुद्दे का राजनीतिकरण करने का आरोप लगाया। उन्होंने इतिहास संबंधी भाजपा की समझ पर भी सवाल उठाए। उन्होंने कहा, देखिए, भाजपा को पहले अपना इतिहास ठीक से समझना चाहिए। टीपू सुल्तान ने चार आंग्ल-मैसूर युद्ध लड़े थे। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) ने स्वतंत्रता संग्राम में हिस्सा तक नहीं लिया था। उसने सविनय अवज्ञा आंदोलन, भारत छोड़ो आंदोलन, दांडी मार्च या असहयोग आंदोलन में भाग नहीं लिया था। वह किसी भी गोलमेज सम्मेलन का हिस्सा नहीं था। उसने कुछ नहीं किया और अब वही लोग शर्तें तय कर रहे हैं। मंत्री ने दावा किया कि कर्नाटक के पूर्व मुख्यमंत्री बी एस येदियुरप्पा ने पद पर रहते हुए एक किताब में पहले टीपू सुल्तान की प्रशंसा की थी। उन्होंने कहा, आप राज्य में टीपू सुल्तान के योगदान को नकार नहीं सकते। यह कुछ और नहीं, बल्कि राजनीति है। जब उन्हें वोट चाहिए होते हैं, तब वे अल्पसंख्यकों के पक्ष में खड़े होते हैं और जब ऐसा नहीं होता, तो इस तरह का व्यवहार करते हैं। यह पूछे जाने पर कि क्या सरकार फिर से टीपू जयंती मनाने पर विचार करेगी, खरगे ने कहा कि इस बारे में फैसला सरकार को लेना है।

# जैसे-जैसे समय आएगा, सारी बातें बता दी जाएंगी : सुनेत्रा

## एनसीपी विलय की अटकलों को लेकर का आया उपमुख्यमंत्री का बयान

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

**पुणे। महाराष्ट्र में पिछले कई दिनों से एनसीपी के दोनों गुटों के विलय की अटकलें चल रही है। इस बीच सूबे उपमुख्यमंत्री सुनेत्रा पवार ने पुणे में प्रेस कॉन्फ्रेंस करते कई तरह की बातें कही हैं। पिछले कुछ दिनों से अजित पवार गुट और शरद पवार गुट के विलय को लेकर सूबे में सियासी हलचल तेज है, हालांकि दोनों तरफ से अभी तक कोई आधिकारिक ऐलान नहीं हुआ है।**

इसी से जुड़ा सवाल पूछे जाने पर सुनेत्रा पवार ने कहा, जैसे-जैसे समय आएगा, आपको सारी बातें बता दी जाएंगी। सुनेत्रा पवार ने बिरसा मुंडा को याद करते हुए कहा प्रेस कॉन्फ्रेंस



के दौरान कहा, 15 नवंबर को बिरसा मुंडा की जयंती के मौके पर राज्य सरकार द्वारा विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया गया है। बिरसा जी ने आदिवासियों के जल, जंगल और जमीन की रक्षा के लिए काम किया है। वे केवल जनजातियों के ही नहीं, बल्कि पूरे देश के देवता हैं। इस दिन को जनजातीय दिवस के रूप में मनाया जाएगा। डिप्टी सीएम ने आगे कहा कि हम इसे जनजातीय गौरव सप्ताह के तौर पर भी मनाएंगे। इस हफ्ते स्मारक स्वच्छता महोत्सव, जंगली सब्जियों का महोत्सव, स्वास्थ्य शिविर आयोजित किए जाएंगे और सरकारी दस्तावेज भी बांटे जाएंगे।

यह आयोजन एकीकृत आदिवासी विकास विभाग की तरफ से बीड और पुणे में किया जाएगा। सुनेत्रा पवार ने आगे कहा, सरकार 15 हजार शिक्षकों की भर्ती करने जा रही है। इसके अलावा नर्सों की भर्ती, छात्रों के लिए छात्रवृत्ति और महिलाओं के लिए वीर दुर्गावती योजना लागू की जाएगी। आदिवासी सरकारी छात्रावासों में मेस की सुविधा शुरू कर दी गई है।

# कोलकाता एयरपोर्ट पर एअर इंडिया विमान को हाईजैक की धमकी से हड़कंप

» टॉयलेट में मिला नोट, मुंबई जा रही थी फ्लाइट

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

**कोलकाता। कोलकाता के नेताजी सुभाष चंद्र बोस अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे पर बुधवार सुबह उस समय हड़कंप मच गया, जब मुंबई जाने वाली एअर इंडिया की एक फ्लाइट में हाईजैक की धमकी मिलने की सूचना सामने आई। विमान के शौचालय के शीशे पर हाईजैक से संबंधित धमकी भरा संदेश लिखा मिला।**

जानकारी के मुताबिक, विमान उड़ान भरने की तैयारी में था। इसी दौरान शौचालय के शीशे पर लिखे धमकी भरे संदेश पर नजर पड़ी। घटना की जानकारी मिलते ही पायलट ने एअर ट्रैफिक कंट्रोल को अलर्ट कर दिया। इसके बाद विमान को आइसोलेशन बे में ले जाया गया, जहां केंद्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल-सीआईएसफ और एअरपोर्ट के विशेष सुरक्षा अधिकारियों ने सघन तलाशी अभियान शुरू किया। विमान के अंदर किसी भी संदिग्ध वस्तु की मौजूदगी का पता लगाने के लिए चप्पे-चप्पे की जांच की जा रही है।

### पुलिस ने जांच शुरू की

वहीं, शौचालय के शीशे पर धमकी भरा संदेश किसने लिखा और इसके पीछे किसका हाथ है, इसकी जांच पुलिस और सुरक्षा एजेंसियों ने शुरू कर दी है। विमान में सवार यात्रियों की सूची के साथ एअरपोर्ट परिसर और विमान के अंदर लगे सीसीटीवी कैमरों की फुटेज भी खंगाली जा रही है। फिलहाल, जांच एजेंसियां पूरे मामले की पड़ताल में जुटी हैं।

# दिल्ली के 80 प्रतिशत प्रदूषण के लिए पटाखे जिम्मेदार

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

**नई दिल्ली। दिवाली के बाद दिल्ली-एनसीआर में वायु प्रदूषण को लेकर जारी बहस के बीच इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ ट्रॉपिकल मेटेरोलॉजी (आईआईटीएम ) की एक रिपोर्ट ने बड़ा खुलासा किया है। संस्थान के मुताबिक दिवाली के अगले दिन राष्ट्रीय राजधानी में प्रदूषण बढ़ने के पीछे सबसे बड़ा कारण पटाखों से निकला धुआं था।**

रिपोर्ट में दावा किया गया कि 9 नवंबर की सुबह दिल्ली में पीएम 2.5 प्रदूषण में पटाखों की हिस्सेदारी 71 प्रतिशत से अधिक रही, जबकि सोमवार को कुल प्रदूषण भार में उनका योगदान 80 प्रतिशत से ज्यादा आंका गया। हालांकि इस निष्कर्ष पर कुछ संगठनों ने सवाल भी उठाए हैं। इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ ट्रॉपिकल मेटेरोलॉजी द्वारा किए गए विश्लेषण के अनुसार दिवाली के बाद दिल्ली की वायु गुणवत्ता में आई भारी गिरावट के लिए पटाखों का धुआं मुख्य रूप से जिम्मेदार रहा। रिपोर्ट के मुताबिक, 9 नवंबर को रात 1 बजे से सुबह 9 बजे के बीच पीएम 2.5 प्रदूषण में पटाखों की हिस्सेदारी 71.1 प्रतिशत दर्ज की गई. वहीं सोमवार को राजधानी के कुल प्रदूषण भार में इनका योगदान 80 प्रतिशत से अधिक आंका गया। स्टडी में यह भी सामने आया कि दिवाली के आसपास प्रदूषण के स्रोतों में अचानक बड़ा बदलाव देखा गया।

# इंसानियत शर्मसार, महिला का हाथ-पैर बांधकर बेरहमी से पीटा

» प्राइवेट पार्ट पर डंडे बरसाए, वीडियो वायरल होने पर मचा हड़कंप

» 40-50 लोगों की मौजूदगी में महिला चीखती-चिल्लाती रही किसी ने नहीं बचाया

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

**लखनऊ। राजधानी के इंदिरानगर थाना क्षेत्र के सुगामऊ में इंसानियत को शर्मसार करने वाली घटना सामने आई है। जहाँ एक महिला को रस्सी से हाथ-पैर बांधकर बेरहमी से पीटा गया। आरोप है कि हमलावरों ने महिला को उल्टा लटकाकर लात-घूंसों से हमला किया और उसके प्राइवेट पार्ट पर भी डंडे बरसाए। महिला लगातार चीखती-चिल्लाती और छोड़ने की गुहार लगाती रही, लेकिन मौके पर मौजूद लोगों का दिल नहीं पसीजा।**

घटना 6 नवंबर की बताई जा रही है, जबकि मारपीट का करीब दो मिनट का वीडियो 10 नवंबर को सामने आया। वीडियो में महिला जमीन पर पड़ी दिखाई दे रही है। उसके पैर में रस्सी बंधी है और कई लोग उसे घेरकर डंडों से पीट रहे हैं। महिला के मुंह से खून निकलता भी दिखाई दे रहा है। हैरानी की बात यह है कि मौके पर बड़ी संख्या में लोग मौजूद थे, लेकिन किसी ने उसे बचाने की कोशिश नहीं की।



### वीडियो वायरल होते ही बस्ती में हंगामा

वीडियो सामने आने के बाद आसपास के लोगों में आक्रोश फैल गया। गुस्साए लोग सुगामऊ की झुग्गी-बस्ती में पहुंच गए और जमकर हंगामा किया। इस दौरान झुग्गियों में तोड़फोड़ की गई और आग लगाने की कोशिश भी हुई। सूचना पर पहुंची पुलिस ने किसी तरह स्थिति को संभाला।

### इंस्पेक्टर के बयान पर घमासान

मामले में इंदिरानगर इंस्पेक्टर अजय नारायण सिंह की भूमिका भी सवालों के घेरे में है। आरोप है कि हंगामे के दौरान मौके पर पहुंचे इंस्पेक्टर ने घायल महिला को देखकर कहा कि 'इसको कुछ नहीं हुआ, नौटंकी कर रही है।' पीड़ित पक्ष का आरोप है कि घटना वाले दिन महिला के परिजन शिकायत लेकर थाने पहुंचे थे, लेकिन इंस्पेक्टर ने तहरीर नहीं ली और उन्हें वापस भेज दिया। वहीं, एसआई गौरव पर समझौते का दबाव बनाने का आरोप लगाया गया है।

एडीसीपी पूर्वी अमोल मुरकुट के मुताबिक, वीडियो करीब पांच दिन पुराना है। महिला जरहरा गांव की रहने वाली है और मानसिक रूप से कमजोर बताई गई है। आरोपियों को संदेह था कि महिला बच्चा चोरी करने आई है। इसी शक में उसके साथ मारपीट की गई।

**महाराष्ट्र कार्यालय**:- 4पीएम न्यूज़ नेटवर्क, 2-डी सिटी मॉल, अंधेरी वेस्ट, मुंबई, महाराष्ट्र - 400053। **विधि सलाहकार**: मोहम्मद हैदर
*इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी।
**RNI-UPHIN/2015/62233**, **दूरभाष**: 0522- 4078371 | **Email**: daily4pm@gmail.com | **website**: www.4pm.co.in |
समस्त विवाद लखनऊ न्यायालय के अधीन ही होंगे।

स्वामी **4** पीएम न्यूज नेटवर्क्स प्राइवेट लिमिटेड के लिए
मुद्रक एवं प्रकाशक **संजय शर्मा**
द्वारा **आस्था प्रिंटर्स**, 5/600, विकास खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ-226010 (यूपी) से मुद्रित
पता 5/600, विकास खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ-226010 (यूपी) से प्रकाशित। **संपादक- संजय शर्मा**